

38वाँ अंक - (संयुक्तांक) (अक्टूबर 2020-सितम्बर 2021)

उदयाचल

(कार्यालय पत्रिका)



आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, राँची



उदयाचल परिवार



श्रीमती इन्दु अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)



श्री संजीव कुमार
वरिष्ठ उप-महालेखाकार



श्री अजय कुमार
वरिष्ठ उप-महालेखाकार



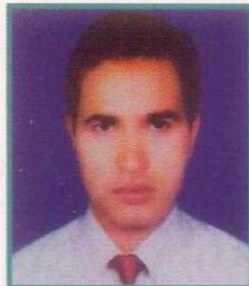
श्री जे. बी. गुप्ता
उप-महालेखाकार



श्री अजय कुमार
प्रधान संपादक



श्री आलोक कुमार
संपादक



श्री संजीव कुमार यादव
उप-संपादक



श्री बालमुकुन्द पाठक
उप-संपादक

उद्योचल

कलरुललत डतुरलकल

38वुँ अंक (संयुक्तलंक) (अक्टूबर 2020 - सलतम्बर 2021)

डतुरलकल डरलवलर

सरंक्षक

शुरीढती इंदु अग्रवल

डुधलन ढलललेखलकलर (लेखलडरीक्षल), इललरखणुड, रलँची

डुरकलशलक डरलढशुदलतु सढलतल

शुरी संजीव कुढलर

शुरी अजय कुढलर

शुरी जे. बी. गुडुतल

वरलषुठ उड-ढलललेखलकलर (डुरलशलसन)

वरलषुठ उड-ढलललेखलकलर

उड-ढलललेखलकलर

संडलदक ढंडल

शुरी अजय कुढलर

शुरी आलुक कुढलर

शुरी संजीव कुढलर डलदव

शुरी बललढुकुनुद डलठक

वरलषुठ लेखलडरीक्षल अधलकलरी

सलललतक लेखलडरीक्षल अधलकलरी

कनलषुठ अनुवलदक

लेखलडरीक्षक

डुरधलन संडलदक

संडलदक

उड-संडलदक

उड-संडलदक

उदयाचल

कार्यालय पत्रिका

38वाँ अंक (संयुक्तांक) (अक्टूबर 2020 - सितम्बर 2021)

स्वत्वाधिकार	: प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची
प्रकाशन	: 'उदयाचल' (कार्यालय पत्रिका) प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची
अंक	: 38वाँ
आवरण एवं मुद्रक पत्रिका सज्जा	: निमंत्रण कार्ड, डोरण्डा, राँची
छायाकार	: सुश्री सुरुचि सिंह नेगी
आवरण चित्र	: आजादी का अमृत महोत्सव से संबंधित
मूल्य	: राजभाषा एवं कार्य के प्रति निष्ठा
वितरण	: हिन्दी प्रकोष्ठ

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं जिनसे 'उदयाचल' परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ. संख्या
1.	आजादी का अमृत महोत्सव - आवरण लेख	श्री आलोक कुमार	08-10
2.	राजभाषा हिन्दी की वर्तमान स्थिति एवं बढ़ावा देने हेतु विचार	श्री विकास चन्द्र आजाद	11-15
3.	बीस रुपये का समाचार पत्र	श्री कुन्दन कुमार	16-19
4.	दान	श्री बालमुकुन्द पाठक	20-21
5.	सामने वाली आंटी	श्री आलोक कुमार	22-25
6.	दिनचर्या का प्रारम्भ	श्री मनोज कुमार नं०-5	26-28
7.	दिवाना	श्री संजीव कुमार रादव	29-30
8.	दाखिल खारिज	श्री आलोक कुमार	31-34
9.	अन्तिम उपहार	श्री बालमुकुन्द पाठक	35
10.	एक राज्य, एक खेल	सुश्री नेहा कुमारी	36-38
11.	हिन्दी के संवर्धन में मेरे प्रयास	श्रीमती आरती पाठक	39-40
12.	पापा गंदे हो गये हैं	सुश्री निष्ठा पाठक	41
13.	बंदिनी	श्री शम्भु शरण भारती	42
14.	निराली शाम	श्री शम्भु शरण भारती	43
15.	खगोलीय दर्शन	श्री आलोक कुमार	44
16.	यायावरी	श्री आलोक कुमार	44
17.	बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए	श्री निशिकांत कुमार	45
18.	समय	श्रीमती आरती पाठक	46

▲ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।

▲ मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।

▲ शब्दों के लिए अटकिये नहीं।

▲ अशुद्धियों से घबराइये नहीं।

▲ अभ्यास अविलम्ब आरंभ कीजिए।

संरक्षक की कलम से ...



“उदयाचल” के 38वें अंक का प्रकाशन अपार हर्ष का विषय है। समूचे भारत वर्ष में आजादी का अमृत महोत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में इस कार्यालय की गृह पत्रिका “उदयाचल” का प्रकाशन पाठक वर्ग को समर्पित है। मुझे आशा है कि “उदयाचल” का यह अंक पाठकों को निश्चित रूप से अभिभूत करेगा।

उदयाचल के प्रकाशन से न केवल राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार होगा, अपितु, कार्मिकों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करेगा। यह पत्रिका पाठक वर्ग को अगले अंक हेतु उत्कृष्ट स्वरचनाएँ देने के लिए भी प्रेरित करेगा। राजभाषा का निरंतर विकास हो, यही मेरी शुभकामनाएँ हैं।

इ-डू अग्रवाल

(श्रीमती इन्दु अग्रवाल)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

राँची, झारखण्ड

संदेश



कार्यालय की गृह पत्रिका “उदयाचल” का 38वाँ अंक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है। पठन-पाठन व्यक्तित्व के विकास में सहायक तो है ही, साथ ही यह पाठक वर्ग को सृजनात्मक व रचनात्मक बनाने में सहयोग प्रदान करता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “उदयाचल” का यह अंक पाठकों को अच्छा लगेगा। आजादी के अमृत महोत्सव में हम अपनी कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन व मेहनत से देश के विकास मार्ग को प्रशस्त करें। राजभाषा का उत्तरोत्तर विकास होता रहे, यह मेरी शुभकामनाएँ हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल, रचनाकारों तथा इससे जुड़े सभी कार्मिकों को धन्यवाद!

(श्री संजीव कुमार)

वरिष्ठ उप-महालेखाकार
(प्रशासन)

प्रधान संपादक की कलम से ...



कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका उदयाचल के 38वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं अत्यंत प्रफुल्लित हूँ। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं की विशेष भूमिका होती है। भाषा व्यक्ति की अभिव्यक्ति को एक दूसरे से संप्रेषित करने का एक सशक्त माध्यम होती है। संविधान निर्माताओं ने भी हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया है। अतः हम सब का यह परम कर्तव्य होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी का कार्यालय में दैनिक उपयोग करें। कार्यालय में फाइलों पर सहज एवं सरल हिंदी हो। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने हेतु व्यावहारिक उपाय पर विशेष बल दें।

पत्रिका को त्रुटिरहित बनाने का प्रयास किया गया है। पाठकों से अनुरोध है कि वे अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायें।

A stylized handwritten signature in black ink.

(श्री अजय कुमार)

प्रधान संपादक

आजादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त, 2022 को हमारा देश स्वतंत्रता की 75 वीं सालगिरह मनाने जा रहा है। स्वाधीनता के 75 साल किसी भी राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण अवधि होती है। यह समय है जब एक राष्ट्र अपने अतीत पर विहंगम दृष्टि डाल, विगत घटनाओं की आलोचनात्मक समीक्षा कर, भविष्य की रूप रेखा का खाका तैयार करता है।

सर्वविदित है कि हमें आजादी एक लंबे संघर्षों के बाद मिली। करीब 200 वर्षों के अनवरत प्रयास एवं असंख्य महान व्यक्तियों के त्याग और बलिदान का सुखद परिणाम आज हम सभी देशवासी महसूस कर रहे हैं। यह जरूरी है कि राष्ट्र का प्रत्येक देशवासी यह अनुभव करे कि हमें आजादी चाँदी की तश्तरी में नहीं पेश की गई है, बल्कि इसके लिए पुरानी पीढ़ियों ने असंख्य कुर्बानियाँ दी हैं। वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को, इन कुर्बानियों की यादें संजोए रखने की जरूरत है और साथ में, यह भी जरूरी है कि विभिन्न कालखण्डों में घटने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, जिसका हमारे राष्ट्र के निर्माण पर असर पड़ा हो, की आलोचनात्मक विवेचना करें, ताकि गलतियों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान सरकार ने भारतीय स्वतंत्रता के 75वीं

वर्षगाँठ को “आजादी का अमृत महोत्सव” के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। विगत 15 अगस्त, 2021 के



स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर, लाल किले के प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि “राष्ट्र इस बार 75वीं स्वाधीनता दिवस मना रहा है। राष्ट्र की स्वतंत्रता के 75 वर्ष एक महत्वपूर्ण पड़ाव होते हैं, जिसे एक कार्यक्रम के रूप में मनाया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय इतिहास की उन घटनाओं और व्यक्तियों से जुड़े पलों को याद करना है, जो हमें देशभक्ति की प्रेरणा देते हैं।”

इस कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत प्रधानमंत्री ने 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से की, जहाँ से महात्मा गाँधी ने सन् 1930 में इसी दिन दांडी से ऐतिहासिक पदयात्रा शुरू की थी। देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के 75 हफ्ते पहले शुरू होने वाले महोत्सव की रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री महोदय ने राष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास के सफर का उल्लेख किया और सभी समुदायों, धर्मों, वर्गों और संगठनों से इसे धूम-धाम से मनाने की अपील की। अमृत महोत्सव का अर्थ

समझाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ—आजादी की ऊर्जा का अमृत है। यह स्वतंत्रता सेनानियों की स्वाधीनता आंदोलन का अमृत है। यह नए विचारों, नए संकल्पों और नयी आत्म—निर्भरता का अमृत है।

“आजादी का अमृत महोत्सव” पूरे देश में 15 अगस्त, 2023 तक मनाया जाएगा। सरकार ने इस योजना को एक जन आन्दोलन का स्वरूप देने का निश्चय किया है। सरकार के सभी मंत्रालयों ने अपने अधीनस्थ प्रत्येक विभागों को उनके संबंधित कार्यक्रमों को लेकर एक योजना तैयार करने का निर्देश दिया है, जिससे इस महोत्सव का व्यापक प्रचार—प्रसार हो और इसमें आम जनों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में, गाँधीजी की दांडी यात्रा से प्रेरणा लेकर एक फ्रीडम मार्च (स्वाधीनता यात्रा) का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्रीय मंत्री श्री गिरिराज सिंह, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रुपाणी के अलावा 80 व्यक्तियों ने 25 दिन में 241 मील का सफर पैदल तय किया। इस माध्यम से उन स्वतंत्रता सेनानियों और महान क्रांतिकारियों को याद किया गया है, जिन्हें इतिहास के पन्नों में विलुप्त कर दिया गया और वर्तमान पीढ़ी को उनके त्याग और बलिदान के बारे में कुछ भी

जानकारी नहीं है। इस कार्यक्रम के माध्यम से इन महान क्रांतिवीरों की गाथाएँ जन—जन तक पहुँचाने का संकल्पित प्रयास किया गया, ताकि, भावी पीढ़ियाँ भी इनके अविस्मरणीय योगदान से परिचित हो सकें। देश की स्वाधीनता में पुरुषों के साथ—साथ महिलाओं का भी अमूल्य योगदान रहा है। परन्तु, कितने ही ऐसी वीरांगनाएँ विस्मृति के गर्भ में खो गई हैं। इनकी भी गाथाएँ राष्ट्रवासियों के सामने लाने की आवश्यकता है, जिससे आज की बालिकाओं में राष्ट्र प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित की जा सके।

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने “आजादी का अमृत महोत्सव” कार्यक्रम के अंतर्गत जन भागीदारी बढ़ाने के लिए देश के नागरिकों से राष्ट्रगान गाने और इसे वेबसाइट पर अपलोड करने का आह्वान किया, जिसे संकलित कर आगामी 15 अगस्त को दिखाया जाना है। इसी प्रकार, देश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से अपील की गई है कि वे अपने छात्रों को इस अभियान में बढ़—चढ़कर हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करें।

सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे—‘मेक इन इंडिया’ ‘वोकल फोर लोकल’, ‘बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ’ इत्यादि को भी कार्यक्रम के माध्यम से बढ़ावा देने की कोशिश की जा रही है।

इसमें कोई शक नहीं है कि जन भागीदारी पर आधारित यह कार्यक्रम देश के आमजनों को न सिर्फ अतीत के स्वतंत्रता सेनानियों के कृत्यों की यादें ताज़ा कराएगा, बल्कि उनकी कुर्बानियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान करेगा।

इसके अलावा, प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व से सजग होने का यह एक अवसर भी उपलब्ध कराता है।

जरूरत इस बात की है कि आज जब हमारा राष्ट्र स्वाधीनता के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है, हम नागरिक, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को पीछे रख राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दें, ताकि जो सपना हमारे महान वीर क्रांतिकारियों ने आत्मोत्सर्ग के समय देखा था, उसे वास्तविक धरातल पर उतारा जा सके।

श्री आलोक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा हिन्दी की वर्तमान स्थिति एवं बढ़ावा देने हेतु विचार

समस्त जीव जगत के लिए भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त या अभिप्रेषित करता है। राज्य या प्रशासन की भाषा को राजभाषा कहते हैं। प्राचीन काल में भारत में संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाओं का राजभाषा के रूप में प्रयोग होता था। राजपूत काल में तत्कालीन भाषा हिन्दी का प्रयोग राजकाज में किया जाता था। किन्तु इस्लामिक युग में धीरे-धीरे हिन्दी का स्थान फारसी और अरबी भाषाओं ने ले लिया यद्यपि, राजपूत नरेशों एवं मराठों के राजकाज में हिन्दी का प्रयोग किया जाता था। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में फारसी को ही प्रश्रय दिया। फलस्वरूप, वह कचहरियों की भाषा बनी रही। इस बीच 1855 ई० में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को शिक्षा एवं प्रशासन की भाषा के रूप में स्थापित कर दिया। परन्तु अंग्रेजी शासक सदैव यह महसूस करते थे कि लंबे समय तक भारतीय भाषाओं को दबाया नहीं जा सकता और अन्य प्रदेशों में वहाँ की भाषाओं को प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम बनाया गया। फलस्वरूप, इन भाषाओं का उत्तरोत्तर विकास होता गया। राष्ट्रीय नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित करने का प्रयास प्रारंभ किया। गुजराती महान कवि श्री नर्मद ने

सर्वप्रथम हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार 1868 में रखा।

1872 में केशव चन्द्र सेन ने दयानंद सरस्वती को संस्कृत



छोड़ हिन्दी में बोलने की सलाह दी। 1857 में दयानंद सरस्वती ने हिन्दी में 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा।

महात्मा गाँधी ने 1917 में भरूच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है। 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। 1918 में इंदौर में संपन्न आठवें हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गाँधी ने पुनः हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आग्रह किया। इसी वर्ष महात्मा गाँधी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। 1929 में हिन्दी शब्द सागर का प्रकाशन किया गया। 1930 के कांग्रेस अधिवेशन में देश का अंतर प्रांतीय कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही होना उचित है, यह स्वीकार किया गया। 1935 में मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में सी० राजगोपालाचारी ने हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया। 1937 में

हरि गोविन्द गोविल ने देवनागरी के लिए नए टाइपफेस का आविष्कार किया।

इन सारे कार्यों को देखने से यही लगता है कि आजादी के पूर्व तक हिन्दी के विकास में संपूर्ण देश के लोगों ने अनवरत ईमानदार प्रयास किया।

स्वतंत्रता के पश्चात् राजभाषा के विषय पर 11 सितम्बर, 1949 ई० से 14 सितम्बर, 1949 तक गहन बहस हुई, जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दुस्तानी भाषा के दावे पर विचार हुआ। हिन्दी के समर्थक ज्यादा थे, इसलिए नियम समिति ने हिन्दी के पक्ष में अपना निर्णय सुनाया। यह निर्णय हिन्दी विरोधी और हिन्दी समर्थकों के बीच मुंशी आयंगर फार्मूले के द्वारा समझौते के परिणामस्वरूप आया। 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया, इसलिए प्रत्येक वर्ष 1953 के उपरांत 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान का भाग 17, जिसमें कुल 4 अध्याय हैं, प्रथम अध्याय संघ की राजभाषा से संबंधित है (अनुच्छेद 343 एवं अनुच्छेद 344), दूसरा अध्याय प्रादेशिक भाषा से संबंधित है (अनुच्छेद 345 से 347), तब तीसरा अध्याय उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय आदि की भाषा से संबंधित है (अनुच्छेद 348 एवं

अनुच्छेद 349) एवं चौथा अध्याय विशेष निर्देश से संबंधित है (अनुच्छेद 350 एवं 351)।

इसके अतिरिक्त संविधान के अनुच्छेद 8, 29, 30, 120 एवं 210 आदि भी भाषा के बारे में हैं।

10 जनवरी 1963 को अनु० 343 (3) के प्रावधान के अनुसार, राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा एवं अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई। 1967 में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया। 16 दिसम्बर 1967 को संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया। राजभाषा अधिनियम, 1963 में संशोधन किया गया। धारा 3 (5) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि सभी राज्यों के विधान मंडलों द्वारा जिनकी राजभाषा हिन्दी नहीं है ऐसे संकल्प पारित किए जाएँ।

राजभाषा संकल्प, 1968 में किए गए प्रावधान के अनुसार वर्ष 1968-69 से राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए विभिन्न मदों के लक्ष्य निर्धारित किए गए तथा इसके लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया। 1976 में राजभाषा नियम बनाये गये। 1976 में ही संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया। 1986-87 से इंदिरा गाँधी राजभाषा

पुरस्कार प्रारंभ किया गया। 1987 में राजभाषा नियम, 1976 में संशोधन भी किया गया।

वर्ष 2003 से 2007 तक कंप्यूटर की सहायता से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिन्दी स्वयं सीखने के लिए राजभाषा समिति ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर प्रोग्राम (लीला हिन्दी प्रबोध, लीला हिन्दी प्रवीण, लीला हिन्दी प्राज्ञ) तैयार करवा कर सर्वसाधारण द्वारा उसके निःशुल्क प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध कराया। 2017 में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने संसदीय राजभाषा समिति की इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया कि राष्ट्रपति और ऐसे सभी मंत्रियों और अधिकारियों जो हिन्दी पढ़ और बोल सकते हैं को हिन्दी में ही भाषण देना चाहिए और बयान जारी करना चाहिए। वर्ष 2018 में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (ए.आई.सी.टी.ई.) ने हिन्दी माध्यम से इंजीनियरिंग की शिक्षा की अनुमति दी। वर्ष 2019 में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने सभी निर्णयों का हिन्दी या अन्य पाँच भारतीय भाषाओं असमिया, कन्नड़, मराठी, ओडिया एवं तेलुगुद्ध में अनुवाद प्रदान करना प्रारंभ किया। भारत की नयी शिक्षा नीति, 2020 में मातृभाषाओं और हिन्दी को विशेष महत्व देने की अनुशंसा की गई है। केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की आधिकारिक भाषाओं में उर्दू और अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी, डोंगरी

और कश्मीरी को भी सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार, हाल के वर्षों में कुछ सुखद प्रयास किये गये हैं।

हिन्दी विश्व भाषा के रूप में वैश्विक पटल पर उभरी है। फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सुरिनाम और नेपाल की जनता हिन्दी बोलती है। फिजी में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अमेरिका में 'विश्व', 'विज्ञान प्रकाश' एवं मॉरीशस में हिन्दी समाचार 'सौरभ' वसंत आदि पत्रिकाएँ हिन्दी को विकसित कर रही हैं। वर्तमान समय में हिन्दी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के समकक्ष है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में हिन्दी के अनुप्रयोग का सवाल है, तो यह देखने में आया है कि हमारे देश के नेताओं ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है। यदि अटल बिहारी वाजपेई तथा पी०वी० नरसिंहाराव द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में दिया गया वक्तव्य स्मरणीय है, तो श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा राष्ट्रमंडल के देशों की बैठक तथा चंद्रशेखर द्वारा दक्षेस शिखर सम्मेलन के अवसर पर हिन्दी में दिए गए भाषण भी उल्लेखनीय हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत व अन्य देशों में दिए गये हिन्दी भाषण भी सराहनीय हैं।

आज विश्व में अपनी मजबूत स्थिति के बावजूद हिन्दी भाषा अपने ही घर में उपेक्षित जिंदगी जी रही है। अंग्रेजी के मोह जाल से हम अपने आप को नहीं निकाल पाए हैं। जहाँ 'गुड मॉर्निंग से सूर्योदय' और 'गुड इवनिंग से सूर्यास्त', किसी के पैर पर पैर पड़ जाये तो 'सॉरी', गुस्सा आने पर नॉनसेन्स, गेट आउट, इडियट आदि की ध्वनि मुख से बार-बार निकलती है। अंग्रेजी बोलने वालों को तेज-तर्रार, बुद्धिमान समझने एवं हिन्दी बोलने वालों को अनपढ़ गंवार जानने की परंपरा हावी है। अंग्रेजी विद्यालय में बच्चों को शिक्षा के लिए भेजना शान-शौकत बन चुका है तो कैसे कोई कह सकता है कि यह वही देश है जिस देश की 90 प्रतिशत जनता हिन्दी समझती है एवं बोलती है, जिस देश की राजभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

जब भी हिन्दी दिवस आता है, हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन कर हिन्दी पर लम्बे-लम्बे वक्तव्य देकर, प्रतियोगिता आयोजित कर कुछ लोगों को हिन्दी के नाम पर सम्मान/इनाम देकर इतिश्री कर ली जाती है। हिन्दी पखवाड़ा समाप्त होते ही हिन्दी वर्ष भर के लिए विदा हो जाती है।

पूर्वी तथा दक्षिणी भारत में समय-समय पर हिन्दी को लेकर विवाद होता रहता है। चरमपंथियों को लगता है कि हिन्दी के प्रचार से हिन्दुओं का प्रचार होगा। हिन्दी को हिन्दुत्व से

जोड़ने की कोशिशें आजादी के बाद से ही हो रही हैं। रामधारी सिंह दिनकर ने राज्यसभा में एक चर्चा के दौरान साथी सांसद फ्रैंक एंथोनी की इस बात पर कड़ा प्रतिवाद किया था कि हिन्दी हिन्दुत्व की भाषा है। दिनकर जी ने हिन्दी के बारे में सारी शंकाओं को दूर करते हुए कहा था कि हिन्दी संकीर्णताओं की नहीं, बल्कि उदारता की भाषा है। भारत जितना सहिष्णु देश है, हिन्दी भी उतनी ही सहिष्णु और उदार भाषा रही है। कुछ लोग हिन्दी के नाम पर सियासत करते रहते हैं।

हिन्दी को वास्तव में राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु दो-तीन बड़ी बाधाओं को पार करना होगा।

पहला, हिन्दी के दक्षिण भारत में प्रसार के लिए आवश्यक है कि दक्षिण की चार भाषाओं को उत्तर भारत में मान्यता मिले। यह अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। दक्षिणी भाषाओं के प्रति उत्तर भारत में कोई जिज्ञासा नहीं है। भारतीय सेना में, दक्षिण भारत की सैन्य टुकड़ियों के उत्तर भारतीय अफसरों को चार दक्षिणी भाषाओं में से एक सीखनी पड़ती है। उत्तर भारत की शिक्षा प्रणाली में ऐसा कुछ किया जाना नितांत आवश्यक है। जैसे हर माध्यमिक स्कूल में छठी कक्षा से एक दक्षिण भारतीय भाषा पढ़ाने की व्यवस्था हो। ऐसा होने पर उत्तर दक्षिण का भाषायी वैमनस्य जाता रहेगा और तद्जनित सुझाव के वातावरण में सहज ही हिन्दी को दक्षिण भारत में स्वीकृति मिलेगी।

दूसरा, उत्तर भारत की दूसरी भाषाओं के प्रति हिन्दी को विशाल हृदया भी होना होगा। बंगाली, गुजराती, उड़िया आदि के शीर्षस्थ साहित्यकारों की रचनाएँ हिन्दी पाठ्यक्रम से जोड़ी जाएँ। इससे छात्र स्वयं इस भाषायी निकटता से अवगत होंगे। हमारी सांस्कृतिक धरोहर में भिन्न क्षेत्रों के साहित्य का जो योगदान है, उससे उनका परिचय होगा एवं भाषायी सौहार्द भी बढ़ेगा ही।

तीसरा, हमें अंग्रेजी मोह से मुक्त देशों की सफलता के कारणों का मनन करना होगा। वहाँ अंग्रेजी की पुस्तकों का स्वदेशी भाषा में अनुवाद करके उस ज्ञान को जन-साधारण के लिए सुलभ कर देते हैं। जो छात्र उच्चतर अध्ययन के लिए विदेश जाना चाहते हैं, अथवा जो दूसरे कारण से अंग्रेजी में रुचि रखते हैं, केवल वे ही अंग्रेजी पढ़ते हैं। शेष छात्र इस भार से लगभग मुक्त हैं। जबकि, भारत में अंग्रेजी एक विदेशी भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती। इसका पठन-पाठन कुछ ऐसा है मानो हम सब लंदन के निवासी हों। आज से 500 वर्ष पहले विश्व की भाषाओं में अंग्रेजी की कोई गिनती नहीं थी। इसको बोलने वाले दो-एक टापू तक सीमित थे और वहाँ भी विद्वानों की भाषा लैटिन थी। शासक वर्ग में लैटिन की पुत्री इतालवी को सीखने का अधिक चाव था। पर, इंग्लैंड वासी

इस विदेशी भाषा भक्ति से ऊपर उठे। उन्होंने उस समय के सभी महत्वपूर्ण ग्रंथों का, जिसमें बाइबिल प्रमुख थी— अपनी बोली में अनुवाद प्रारंभ किया। विदेशी पुस्तकों, कथाओं आदि के आधार पर अपनी भाषा में साहित्य रचा। उनकी भाषा समृद्ध और सशक्त हुई और साथ ही, सबल हुआ वह समाज।

पाँच सदी पूर्व की अंग्रेजी की तुलना में हमारी भाषाओं की वर्तमान स्थिति श्रेयस्कर है। संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं की विपुल संपदा हमारी धरोहर है। अगर कमी है तो केवल इच्छाशक्ति की, एक संकल्प की, आपसी भाषायी राग-द्वेष को मिटाकर आगे बढ़ने की।

यदि भारत को कभी उन्नत देशों की श्रेणी में गिना जाना है तो जरूरी है हम अंग्रेजी की बेड़ियों से मुक्त हों। उसे एक अतिथि का सम्मान दें। गृहस्वामिनी न मानें। आम आदमी को उसकी भाषा में शिक्षा का शासन दें। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ठीक ही कहा था—

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय के शूल।”

श्री विकास चन्द्र आजाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बीस रुपये का समाचार पत्र

आज बनवीर, अपने दोस्तों को शहर के एक अच्छे रेस्टोरेंट में पार्टी देने वाला था। उसके दोस्त, पार्टी को लेकर उत्साहित थे, जिसकी वजह भी थी पार्टी के लिए बनवीर को राजी करने और उसे इस मुकाम तक पहुँचाने में, उनका भी, कहीं-न-कहीं योगदान था। यह बनवीर के द्वारा दी जाने वाली पार्टी थी। पार्टी का होस्ट, उसे बनना था। परन्तु, हमेशा की तरह, आज भी, वह पार्टी स्थल पर निर्धारित समय से देर पहुँचा था। जबकि, उसके सभी दोस्त, उसके शीघ्र पहुँचने का इंतजार कर रहे थे।

बनवीर और उसके दोस्त व्यापार किया करते थे। व्यापार के सिलसिले में, वे अक्सर एक शहर से दूसरे शहर आना-जाना करते थे। रात्रि विश्राम के लिए किसी होटल में ठहर जाते। बनवीर, एक ईमानदार व्यक्ति था। उसके दोस्त, उनके व्यापार से हटकर होने वाले खर्च के लिए, उसे खजांची बना दिया करते थे। शहर छोड़ने से पहले, बनवीर, उन्हें पाई-पाई का हिसाब दे दिया करता था।

व्यापार के सिलसिले में, जब, वे एक शहर पहुँचे, उस दौरान, बनवीर, उस टीम का खजांची था। एक दिन सुबह-सुबह, बनवीर एक समाचार पत्र खरीद कर होटल लौटा। उसने, अपने दोस्तों को, उस समाचार पत्र की

कीमत बीस रुपये बताया।

उसके दोस्त, प्रायः पाँच रुपये में बिकने वाले साधारण समाचार पत्र की कीमत, बीस रुपये

सुनकर अचम्भित थे। परन्तु, बनवीर से, पेपर की अधिक कीमत की वजह, जानने की हिम्मत, किसी में नहीं थी। क्योंकि, वह, इसी शर्त पर, खजांची हुआ करता था कि उसके द्वारा किये जाने वाले, हर छोटे-छोटे खर्च के लिए, उसे बीच में कोई टोका-टोकी नहीं करेगा। उसके द्वारा, बीस रुपये में एक समाचार पत्र खरीदे जाने का सिलसिला, कई दिनों तक चलता रहा। उसकी अनुपस्थिति में, उसके दोस्त, आपस में बातें किया करते— “कहीं, वह, उनलोगों के बीच होने वाले खर्च में बेईमानी तो नहीं कर रहा है? फिर, वे सोचते “वह, छोटी-छोटी बेईमानी क्यों करेगा? हमें, उसपर भरोसा करना चाहिए।”

शहर छोड़ने से पहले, बनवीर ने खर्च का हिसाब तैयार कर, उनके आगे रखा। उसके दोस्त, किसी अन्य खर्च पर ध्यान नहीं देते हुए, उस समाचार पत्र पर होने वाले खर्च की तरफ नजर डाले। यह क्या! वह, प्रति दिन के समाचार पत्र की कीमत बीस रुपये बताया करता था, परन्तु, खर्च में केवल पाँच रुपये दर्ज



करता था। उसके दोस्तों ने सोचा— “बनवीर को, उनके शक होने का आभास हो गया है और वह, अपनी बेईमानी के मार्ग से, ईमानदारी के मार्ग पर लौट आया है।” उन्हें डर था— “उनकी शक की वजह से, आने वाले समय में, कहीं, वह खर्च का हिसाब रखने से इंकार ना कर दे।”

सभी, अपने व्यापार के निर्धारित लक्ष्य से, अधिक का व्यापार कर चुके थे। जिसके लिए, उन्हें दिन—रात कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। शहर से लौटते वक्त, उसके दोस्त काफी थके लग रहे थे। व्यापार से अधिक लक्ष्य प्राप्ति के बावजूद, उनके चेहरे पर, खुशी, नहीं झलक रही थी। परन्तु, बनवीर आज प्रसन्नचित नजर आ रहा था। वे समझ नहीं पा रहे थे, आखिर उसने, इस दफा, व्यापार के दौरान कौन—सा तीर मारा था। जो उसे, थकावट के बावजूद, प्रसन्न कर रहा था।

उन लोगों को, उस शहर से लौटने के, दो वर्ष बाद, जब एक दिन, पाँच रुपये का साधारण समाचार पत्र का बीस रुपये में खरीदे जाने का रहस्य पता चला तो सभी दोस्त हैरान रह गये। उस समाचार पत्र में, बीस रुपये में खरीदे जाने वाले समाचार पत्र के ऊपर, एक कहानी छपी थी। उस कहानी के लेखक का नाम बनवीर था। सभी, बनवीर को, अपना दोस्त होने पर गर्व महसूस कर रहे थे। कहानी का सुन्दर चित्रण कहानी को पठनीय बना रहा

था। उस शहर की यात्रा के दौरान, उनलोगों ने, बेवजह बनवीर जैसे, ईमानदार व्यक्ति पर शक किया। सबों की खुशी में चार—चाँद, तब लग गए, जब, इस कहानी के लिए, एक संस्था ने, बनवीर को पुरस्कार देने की घोषणा की।

बनवीर, अपनी कहानी के लिए मिलने वाले पुरस्कार की घोषणा की खुशी में, अपने दोस्तों को रेस्टोरेंट में पार्टी दे रहा था। उसके, सभी दोस्त इस पार्टी को लेकर काफी उत्साहित थे। परन्तु, बनवीर के चेहरे पर खुशी नहीं थी। पार्टी खत्म होते ही, उसके दोस्तों, बनवीर के चेहरे पर खुशी नहीं होने की वजह जानना चाहा तब बनवीर ने, उन्हें बताया।

जब, उसे सूचना मिली थी कि एक संस्था, उसकी, कहानी के लिए पुरस्कार देने वाला है, तभी, उसने, मन बना लिया था, वह, पुरस्कार की राशि, उस, इक्यानबे वर्ष के वृद्ध, जो एक टूटी—फूटी साइकिल पर समाचार पत्र बेचा करता था, को दान कर देगा। उस शहर प्रवास के दौरान उनकी अवस्था को देखकर, वह प्रति दिन, उन्हें, एक पाँच रुपये का साधारण समाचार पत्र की कीमत बीस रुपये, अदा किया करता था।

उस, इक्यानबे वर्ष के, समाचार पत्र बेचने वाले वृद्ध के तीन बच्चे, बहुत पहले, उसे छोड़कर, दुनिया से जा चुके थे। जिसकी वजह से, उसे, उम्र की इस अवस्था में, केवल अपना

नहीं, बल्कि, अपने तीनों बेटों के छोटे बच्चों, जिनकी उम्र बारह से सोलह वर्ष थी, का पेट पालने और उन्हें पढ़ाने के लिए, समाचार पत्र बेचना पड़ रहा था। उसने, बनवीर को बताया था— उसकी इच्छा है, वह किसी तरह, उन्हें, रोजगार के लायक बना दे। उसके बाद, वह शांति से घर में जीवन बिता सकेगा। अपने, इस मकसद को पूरा करने के लिए, उसे कभी, किसी चौक—चौराहे पर भीख मांगना नहीं पड़े। वह नहीं चाहता था, उसके बेटे के बच्चों को, यह सुनने को मिले कि, उसके दादा जी चौक—चौराहे पर भीख माँगा करते थे। लोग उसे, एक समाचार पत्र बेचने वाले के रूप में, दुनिया से, जाने के बाद याद रखें।

समाचार पत्र में, उस दिन की छपी कहानी, उस, समाचार पत्र बेचने वाले वृद्ध व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमती थी जिसे, वह शहर प्रवास के दौरान, एक समाचार पत्र की कीमत, पाँच रूपए के बदले, प्रति दिन बीस रुपये अदा किया करता था। बनवीर को, इस कहानी के लिए पुरस्कार के मुकाम तक पहुँचाने में, उस इक्यानबे वर्ष के वृद्ध व्यक्ति का योगदान था।

कहानी के लिए, पुरस्कार की घोषणा होते ही, उसने, उस शहर में, जान-पहचान वाले एक—दो व्यक्ति से, फोन कर, उस पेपर बेचने वाले वृद्ध व्यक्ति, जो अबतक, तिरानबे की उम्र पार कर रहा होगा, के बारे में जानकारी

लेना चाहा। उससे, वह आशीर्वाद भी लेना चाहता था और पुरस्कार की राशि उन्हें देना चाहता था। बनवीर को पता चला, वह व्यक्ति, पिछले दो महीने से, समाचार पत्र नहीं बेच रहा था। बनवीर ने उस वृद्ध व्यक्ति के बारे में, जानने की बहुत कोशिश की परन्तु, उसकी कोई जानकारी उसे नहीं मिल सकी।

बनवीर, अपने प्रसन्न नहीं होने की वजह, अपने दोस्तों को बता दिया। ;इधर, उसकी मायूसी बढ़ती गई।

पुरस्कार वाले दिन, संस्था द्वारा पुरस्कार के लिए, बनवीर का नाम जब स्टेज से पुकारा गया तो वह अनमने ढंग से, स्टेज पर जा पहुँचा परन्तु, वहाँ पहुँचते ही उसकी आँखे, फटी की फटी रह गई, उसे मालूम हुआ, उसकी कहानी के लिए दिये जाने वाले पुरस्कार, उसी इक्यानबे—तिरानबे के उम्र वाले वृद्ध समाचार पत्र विक्रेता के हाथों दिया जाना है, पत्र विक्रेता जिसे वह शहर प्रवास के दौरान, 5 रूपया की जगह बीस रुपये अदा किया करता था। उसने अनजाने ही सही बनवीर को इस मुकाम तक पहुँचा दिया था। वह जिसे महीनों से ढूँढ़ रहा था। बनवीर को खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

बनवीर, उस समाचार पत्र वाले के चरणों में जा गिरा। उस समाचार पत्र वाले वृद्ध से, पुरस्कार लेते वक्त, उसकी खुशी देखने लायक थी। उसके सभी दोस्त, उसकी खुशी में

शामिल होने के लिए, स्टेज पर जा पहुँचे थे। उन्होंने अपनी दोस्ती के धर्म को निभाते हुए, अपने, एक ईमानदार और परोपकारी दोस्त की खुशी के लिए, उस समाचार पत्र वाले को ढूँढ़ निकाला था, जो आजकल, अस्वस्थ होने की वजह से, समाचार पत्र नहीं बेचा करता था। जीवन के शेष दिन बिताने के लिए, वह, अपने गाँव लौट आया था। बनवीर के दोस्तों ने, संस्था वालों से मिलकर, उस समाचार पत्र वाले वृद्ध के हाथों, बनवीर को पुरस्कार देने की योजना बनाई थी।

उसके दोस्तों ने उस वृद्ध व्यक्ति की मदद के लिए, एक अच्छी धन राशि इकट्ठा कर रखा था। जिससे, वह अपने जीवन के शेष दिन, अच्छी तरह से गुजार सके। इकट्ठा की गई राशि उन्होंने संस्था के माध्यम से, पुरस्कार वितरण कार्यक्रम की समाप्ति से पहले, उन्हें भेंट कर पुरस्कार दिया।

उसके दोस्त, संस्था के माध्यम से, उस वृद्ध व्यक्ति के एक पुत्र को, जो अब अट्ठारह की

उम्र पार कर चुका था। एक कंपनी में नौकरी के लिए, नियुक्ति-पत्र भी भेंट किया। बनवीर ने, संस्था से मिली पुरस्कार की राशि भी उस समाचार पत्र वाले को भेंट में दे दिया। उसने पुरस्कार खुशी-खुशी, उन्हें, उनके घर तक पहुँचाने की भी व्यवस्था की।

उसके दोस्तों ने बनवीर से हँसते हुए कहा अब उन्हें बनवीर से एक ग्राण्ड पार्टी मिलनी चाहिए।

बनवीर, अपने गले के फूलमाला, जो पुरस्कार मिलने से पहले, उसके गले में डाला गया था, अपने गले से निकालकर, अपने दोस्तों को बारी-बारी से पहनाता गया और बोला— “इस फूलमाला का वास्तविक हकदार, तुमलोग हो, मेरे प्यारे दोस्तों! मैं, तुम्हारे, जैसे अच्छे दोस्तों को पाकर धन्य हूँ। मैं, तुमलोगों के, इस एहसान का बदला कभी नहीं चुका पाऊँगा।

श्री कुन्दन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दान

एक बार की बात है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन कहीं जा रहे थे। रास्ते में अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा—प्रभु, एक जिज्ञासा है मेरे मन में, अगर आज्ञा हो तो पूछूँ? श्रीकृष्ण ने कहा—अर्जुन, तुम मुझसे बिना हिचक, कुछ भी पूछ सकते हो। तब अर्जुन ने कहा कि मुझे आज तक यह बात समझ नहीं आई है कि दान तो मैं भी बहुत करता हूँ, परन्तु सभी लोग कर्ण को ही सबसे बड़ा दानी क्यों कहते हैं?

यह प्रश्न सुन श्रीकृष्ण मुस्कुराये और बोले कि आज मैं तुम्हारी यह जिज्ञासा अवश्य शांत करूँगा। श्रीकृष्ण ने पास में ही स्थित दो पहाड़ियों को सोने का बना दिया। इसके बाद वह अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन इन दोनों सोने की पहाड़ियों को तुम आस—पास के गाँव वालों में बाँट दो।

अर्जुन प्रभु से आज्ञा लेकर तुरंत ही यह काम करने के लिए चल दिए। उन्होंने सभी गाँव वालों को बुलाया। उनसे कहा कि वह लोग पंक्ति बना लें, अब मैं आपको सोना बाँटूँगा और सोना बाँटना शुरू कर दिए। गाँव वालों ने अर्जुन की खूब जय—जयकार करनी शुरू कर दी। अर्जुन पहाड़ी में से सोना तोड़ते गए और गाँव वालों को देते गए। लगातार दो दिन और दो रातों तक अर्जुन सोना बाँटते रहे। उनमें अब तक अहंकार आ चुका था। गाँव के

लोग वापस आकर दोबारा से लाइन में लगने लगे थे। इतने समय पश्चात अर्जुन काफी थक चुके थे। जिन सोने की पहाड़ियों



से अर्जुन सोना तोड़ रहे थे, उन दोनों पहाड़ियों के आकार में जरा भी कमी नहीं आई थी।

उन्होंने श्रीकृष्ण जी से कहा कि अब मुझसे यह काम और न हो सकेगा। मुझे थोड़ा विश्राम चाहिए।

प्रभु ने कहा कि ठीक है, तुम अब विश्राम करो और उन्होंने कर्ण को बुला लिया। उन्होंने कर्ण से कहा कि इन दोनों पहाड़ियों का सोना इन गाँव वालों में बाँट दो। कर्ण तुरंत सोना बाँटने चल दिये। उन्होंने गाँव वालों को बुलाया और उनसे कहा यह सोना आप लोगों का है, जिसको जितना सोना चाहिए, वह यहाँ से ले जाये। ऐसा कह कर कर्ण वहाँ से चले गए। यह देख कर अर्जुन ने कहा कि ऐसा करने का विचार मेरे मन में क्यों नहीं आया? इस पर श्रीकृष्ण ने जवाब दिया कि तुम्हें सोने से मोह हो गया था। तुम खुद यह निर्णय कर रहे थे कि किस गाँव वाले की कितनी जरूरत है। उतना ही सोना तुम पहाड़ी में से खोद कर उन्हें दे रहे थे। तुम में दाता होने का भाव आ गया था। दूसरी तरफ कर्ण ने ऐसा नहीं किया। वह सारा सोना गाँव वालों को देकर वहाँ से चले गए।

वह नहीं चाहते थे कि उनके सामने कोई उनकी जय-जयकार करे या प्रशंसा करे। उनके पीठ-पीछे भी लोग क्या कहते हैं उससे उनको कोई फर्क नहीं पड़ता। यह उस आदमी की निशानी है जिसे आत्मज्ञान हासिल हो चुका है। इस तरह श्रीकृष्ण ने खूबसूरत तरीके से अर्जुन के प्रश्न का उत्तर दिया, अर्जुन को भी अब

अपने प्रश्न का उत्तर मिल चुका था।

निष्कर्ष:— दान देने के बदले में धन्यवाद या बधाई की उम्मीद करने से वह दान नहीं, बल्कि सौदा कहलाता है। यदि हम किसी को कुछ दान या सहयोग करना चाहते हैं, तो हमें यह बिना किसी उम्मीद या आशा के करनी चाहिए, ताकि यह हमारा सत्कर्म हो, न कि हमारा अहंकार।

श्री बालमुकुन्द पाठक
लेखापरीक्षक

सामने वाली आंटी

मेरे घर के सामने वाले मकान में एक वृद्ध महिला रहती हैं। मैं इन्हें आंटी कहकर बुलाता हूँ। कोई ज्यादा बातचीत नहीं होती, पर कभी-कभार शहरों के दस्तूर के मुताबिक थोड़ी जरूरत भर की बातें हो जाती हैं। मसलन 'बहुत देर से लाइट कटी हुई है, बारिश नहीं हो रही है या गर्मी इस बार ज्यादा पड़ रही है' वगैरह-वगैरह। आंटी ज्यादा बात नहीं करती हैं और अनेक सवालों के जवाब संक्षिप्त हाँ या ना में देना पसंद करती हैं, जिसके कारण इतने दिनों के बाद भी हमारी बातचीत औपचारिकता से ज्यादा आगे न बढ़ पाई। आंटी के साथ उनका एक नाती भी रहता है, जो उनकी ही तरह मितभाषी है और अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहता है। आंटी के चार बच्चे हैं — दो बेटे और दो बेटियाँ। चारों बच्चे शादीशुदा हैं और अपनी जिंदगी में व्यस्त। एक निश्चित समय के अंतराल पर इन चारों में से कोई न कोई आंटी के पास आता रहता है और तब सामने वाले मकान में चहल-पहल बढ़ जाती है।

जब शुरू में इस घर में आया था तो आंटी को अकेला देखकर मैंने समझा कि शायद आंटी विधवा हैं, परन्तु दो चार महीनों के बाद मकान के निचले तल में एक बुजुर्ग की उपस्थिति का अहसास हुआ, तब पता चला कि महाशय आंटी के पति हैं जो अधिकांश समय

अपने गाँव में व्यतीत करते हैं और कभी-कभी इस घर में रहने आ जाते हैं।



वैसे तो इस जोड़े में ध्यान देने वाली कोई विशेष बात नहीं थी, पर काफी दिनों के अनुभव के बाद यह बात पता चली कि आंटी और उनके पति के बीच बातचीत बिल्कुल भी नहीं होती थी। दोनों नितांत अजनबियों की तरह रहते थे। मकान दो तल्ले का था और दोनो जन एक-एक तल्ले पर रहते हैं, उपर वाले तल्ले पर आंटी जी और निचले तल्ले पर अंकल। बात खटकने वाली अवश्य थी। प्रौढ़ावस्था में अलगाव होना अचरज का विषय था। अंकल को कभी ऊपर के तल्ले में नहीं देखा। इसी प्रकार आंटी कभी अंकल के रहते नीचे तल्ले पर नजर नहीं आती थीं। जहाँ तक संभव हो सके, दोनों एक दूसरे की नजर पड़ने से भी कतराते थे।

मैंने महसूस किया कि दोपहर में रोजाना वृद्ध अंकल स्कूटी से कहीं जाते थे और लगभग एक घंटे में वापस आ जाते थे, मैंने अंदाजा लगाया कि शायद लंच करने के लिए भोजनालय में जाते होंगे। इसी प्रकार डिनर के लिए भी शाम के छः-सात बजे एक बार जाना होता था। यह दिनचर्या बिल्कुल नियमित थी, जिसका अर्थ था कि दोनों के बीच खाने-पीने का संबंध भी मिट चुका था।

एक साथ रहते हुए भी दोनों एक दूसरे के लिए नितान्त अजनबी बन चुके थे। मानवीय रिश्तों का यह पहलू मेरे लिए नितान्त नया था और इसी कारण मेरी दिलचस्पी इस जोड़े में बढ़ती जा रही थी।

आज आंटी की बेटी आई हुई है। एक बड़ी सी सरकारी गाड़ी में और साथ में पुलिस की वर्दी में एक अंगरक्षक भी है। बेटी राज्य सरकार में उच्च पदस्थ अधिकारी है। बीच-बीच में आती रहती हैं। शायद अपने बेटे से मिलने अथवा अपनी माँ से मिलने। यह अच्छी व्यवस्था है, एक साथ दोनों से मिलना हो जाता है। बेटी के आने से आंटी की प्रसन्नता बढ़ जाती है, मानो भीषण गर्मी में बारिश की कुछ फुहारें पड़ गयी हों। पर मुझे थोड़ी असुविधा हो जाती है। आंटी के दामाद जो शायद हाउस हसबैण्ड हैं, (यह मेरा अनुमान है क्योंकि इन्हें हमेशा मैंने पत्नी के साथ ही आते जाते देखा है), ये महाशय मेरी तरफ ही कुर्सी लगाकर बैठ जाते हैं और एकटक निहारा करते हैं। पत्नी असहज महसूस करती हैं और मुझे टोकती हैं। पहले तो मुझे भी गुस्सा आया, पर उम्र का ख्याल कर धीरे-धीरे सारा क्रोध पी गया अब तो आदत सी हो गयी है, इस बात की। सच है सारा खेल मन का है। मन के प्रतिरोध को दबा दिया जाए तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अपने आप ही हो जाता है। मैंने भी ऐसा ही किया और अब

मुझे इनके इस व्यवहार से कोई शिकायत नहीं रही।

यह महाशय तो मुझे बड़े ही सज्जन प्रवृत्ति के इंसान लगे। पत्नी के व्यक्तित्व के सामने अपने आप को समर्पित कर डाला। अपना कोई कैरियर न था। पत्नी के कैरियर से संतुष्ट और सुखी थे। पेशे से वकील थे, पर नियमित प्रैक्टिस नहीं करते थे। ऐसा मुझे ड्राइवर से पता चला था। इनका अधिकांश समय श्रीमती जी के कार्यों में सहयोग देने में ही बीत जाता था। वैसे इसमें कुछ भी गलत न था। पति और पत्नी दोनों नौकरी पेशा और व्यस्त हों, तो परिवार में रोजाना भाग-दौड़ की स्थिति बन जाती है, जिसका बच्चों की परवरिश पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। यदि एक साथी घर और बच्चों की जिम्मेवारी ले, तो जिंदगी आसान हो जाती है। सुखद बात यह है कि आज का समाज पुरुषों द्वारा अभी ली जाने वाली इन सभी जिम्मेदारियों को सकारात्मक रूप से स्वीकार कर रहा है। वरना अभी एक पीढ़ी पहले ही ऐसे पुरुषों को 'जोरु का गुलाम' 'पत्नी की कमाई पर पलने वाला' जैसे विशेषणों से नवाज कर उनका मजाक उड़ाया जाता था।

इधर कुछ दिनों से मुहल्ले के कुछ लड़के आंटी के घर के सामने वाले सड़क पर क्रिकेट खेलने लगे थे। लॉकडाउन के समय में जब सारी दुनिया घरों में कैद थी, तब यह

लड़के सारे सुरक्षा संबंधी नियमों को धता बता कर समूह में खेलने में व्यस्त थे। कुछ लोगों ने समझाने का प्रयास किया, परन्तु इन पर कोई असर न हुआ। इनके माता-पिता भी कैसे लापरवाह थे, जो इन्हें ऐसा करने से रोकते नहीं थे। धीरे-धीरे इनकी देखा-देखी और भी लड़के समूह में जुड़ते गए और अब एक पूरी टीम खेलने के लिए जमा होने लगी। लड़कों द्वारा मारी जाने वाली गेंद अक्सर ही आंटी की चहारदीवारी के अंदर जाने लगी। जब बार-बार लड़के गेट खोलकर अंदर जाते, तो आंटी ने आपत्ति की पर लड़के कहाँ मानने वाले थे। गेट से पता चलने का भय था तो दीवार कूदकर चुपके से अंदर घुसने लगे। आंटी ने चहारदीवारी के अंदर खाली भूखंड में कुछ पौधे लगाए हुए थे, जो अनधिकार अतिक्रमण के कारण कुचले जाते थे। बार-बार के इस नुकसान से आंटी क्रोधित हो उठीं और उन्होंने इन लड़कों को भला-बुरा कहना शुरू कर दिया।

लड़के भी बड़े बेशरम थे। गलती मानने के बजाए वृद्धा से जबान लड़ाने लगे। आंटी ने एक को जो देखने में मोटा था, गैंडा कह दिया, बात उसकी माँ तक जा पहुँची। थोड़ी देर के बाद जब धुंधलका सा छाने लगा, दो मोटी महिलाएँ, जिनमें से एक उस बच्चे की माँ थी, जिसे आंटी ने गैंडा कहा था और दूसरी उस

झुंड के सबसे उत्पाती लड़के की माँ, इधर आती दिखाई दी। दोनों के जोर-जोर से कुछ कहने की आवाजें आ रही थीं। आंटी खतरा भांपकर तुरंत अंदर चली गयीं। दोनो महिलाएँ आंटी के गेट के पास तेज स्वर में बोलने लगीं। एक ने कहा — ‘इतनी उम्र हो गई है, इन्हें बोलना तक नहीं आता है। छोटे बच्चों को ऐसे बोला जाता है? गैंडा कहा जाता है?’ दूसरी ने कहा — ‘लड़के सड़क पर खेलते हैं। किसी का क्या जाता है। सड़क किसी की खरीदी नहीं है। जो मन चाहे करेगा। ये कौन होती हैं रोकने-टोकने वाली।’ इसी प्रकार कितनी बातें कही गईं, दो भद्र माताओं द्वारा। मुझे लग रहा था कि आंटी अब घर से बाहर निकल कर इन महिलाओं की अवांछित बातों का प्रतिकार करेंगी, पर ऐसा हो न सका।

जब लड़के दादी की उम्र की महिला को बुढ़िया, बदमाश और भी न जाने क्या-क्या विशेषणों से नवाजते थे तो आंटी ने गैंडा कह कर क्या गलत किया था। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अपने मजे के लिए दूसरे को तंग करना कहाँ की भलमनसाहत थी। पूरी दुनिया लॉकडाउन में घरों में बंद रहने को विवश थी, लेकिन कुछ अभिभावकों ने निहायत ही गैर जिम्मेदारी का परिचय देते हुए अपनी संतानों को खुली छूट दे रखी थी। क्या ऐसा करना सही था? मुझे उम्मीद थी कि आंटी जी

दृढ़तापूर्वक इन बिंदुओं पर महिलाओं से सामना करेंगी। पर ऐसा हो न सका। थोड़ी देर फिजूल की बकवास करने के उपरांत दोनो महिलाओं ने आस-पास विजयी भाव से देखा और वापस लौट गयीं।

इस घटना को बीते दो दिन हो चुके थे। लड़कों का गली की सड़क पर खेलना बदस्तूर जारी था। आज ही आंटी की बेटी पधारी थीं। शाम में आंटी और पूरा परिवार बालकनी में बैठा लड़कों के खेल पर नजर रख रहा था। आंटी जी बेटी को कुछ बता रही थीं। इन लड़कों के बारे में ही बातें हो रही थीं शायद, क्योंकि बार-बार इशारे से चहारदीवारी के अंदर के पौधे इंगित किए जा रहे थे। मुझे पूरा विश्वास था कि अब इन लड़कों की खैर नहीं। जिन माताओं ने आंटी को भला-बुरा कहा है, उनकी भी खैर नहीं। भला प्रशासन में उच्च पदस्थ अधिकारी से पंगा लेने का साहस कौन कर सकता है? इस कोरोना काल में खुलेआम नियमों की धज्जियाँ उड़ाने वाले बच्चों और उनके माता-पिता अवश्य ही दंड के पात्र थे। उन्हें सजा मिलती देख कितने 'नियम कानून भीरुओं के कलेजों को ठंडक पहुँचती। दुस्साहस पूर्ण यह खेल शायद अब बस कुछ वक्त की ही बात थी।।

आंटी की अधिकारी बेटी का लाव लश्कर सुबह ही घर से प्रस्थान कर चुका था। दिन भर के सन्नाटे के उपरांत शाम में सड़क पर एकबार फिर लड़कों ने कब्जा जमा लिया था। लड़कों के शोर ने पूरी कॉलोनी को गुंजायमान कर रखा था। बॉलिंग करने वाले लड़के ने एक जोर की बॉल फेंकी जिसे बैटिंग करने वाले ने बल्ले के जोरदार प्रहार से दूर भेज दिया था। बॉल एक बार फिर आंटी की चहारदीवारी के अंदर, टीन की शेड से टकराता हुआ जा पहुँचा था। एक जोर की आवाज आई थी मानो टीन ने लड़कों की धृष्टता पर जोर से रोष प्रकट किया हो। आवाज सुनकर आंटी बाहर आई। लड़के थोड़े ठिठक से गए। आंटी के हाथ में एक चादर थी, जिसे उन्होंने लोहे की रैलिंग पर फैला दिया था। अब न आंटी चादर के पार देख सकती थीं और न ही लड़के आंटी को। एक लड़का कूदकर अंदर से बॉल निकाल ले आया। खेल पुनः चालू हो गया। अब प्रतिदिन शाम को लड़कों का खेल चलता रहता है और सामने वाली आंटी की बालकनी में एक बड़ी सी चादर टंगी रहती है। इस चादर की आड़ में दोनों पक्ष खुश और संतुष्ट जान पड़ते हैं।

श्री आलोक कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दिनचर्या का प्रारम्भ

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा पुरातन काल से ही संस्कारों के परिवर्द्धन का मूल स्रोत रहा है। ऐसा अनुमान किया गया है कि हम जैसा सोचते हैं, करते हैं, वैसा ही बन जाते हैं अर्थात् हमारा संस्कार वैसा ही तैयार होता है। संस्कार एवं व्यवहार दिन-प्रतिदिन के कार्यकलाप पर निर्भर करता है। आज के भाग-दौड़ की जिन्दगी में हमलोगों का लाइफस्टाइल बिल्कुल परिवर्तित हो गया है। इसका मुख्य कारण है— देर रात्रि शयन, सुबह देर से जागरण, अनियमित भोजन होना, मोबाइल एडिक्शन, तनाव पूर्ण जीवन, अनावश्यक कार्यों का बोझ आदि। ऐसे में दिन की शुरुआत कैसे करें, यह काफी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि दिन की शुरुआत अच्छी तरह से हो, तो हम दिनभर ऊर्जावान होकर समय का सदुपयोग कर सकते हैं। दिनचर्या का प्रारंभ कैसे करें, उन्हीं बातों की चर्चा यहाँ की गयी है। यह सर्वविदित है, पर थोड़ी-सी लापरवाही के कारण हम इसका लाभ नहीं प्राप्त कर पाते हैं। दिनचर्या का उचित रीति से प्रारम्भ किया जाना शुरुआत में कष्टकारक हो सकता है, पर बाद में यह काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है, जिसका कोई मोल नहीं है।

दिनचर्या का प्रारम्भ प्रातःकालीन जागरण से होता है। जागरण के पश्चात् वाम

करवट से उठना हितकर है।

जागरण का उचित समय तीन से पाँच बजे के बीच माना गया है, जो कि ब्रह्म-मुहूर्त काल



कहलाता है। रत्नावली नामक ग्रन्थ में रात्रि के अंतिम याम को तथा स्कंध-पुराण में रात्रि के अंतिम आधे याम को ब्रह्म-मुहूर्त कहा गया है। मेडिकल साईंस ने अपने रिसर्च में यह सिद्ध किया है कि प्रातःकाल तीन बजे से पांच बजे पीयूष (पिट्यूटरी) तथा पीनियल ग्रंथियों से होनेवाले अंतःस्राव हमारे शरीर में अमृत जैसा प्रभाव डालते हैं, जिससे इम्यूनिटी पावर बढ़ती है और बुद्धि तीक्ष्ण होती है। ऋग्वेद में कहा गया है — “प्राता रत्नम् प्रातरित।” अर्थात् प्रातःकाल में रत्नों की प्राप्ति होती है। अंग्रेजी की एक सुप्रसिद्ध कहावत है—“Early to bed and early to rise, Makes a Man Healthy, Wealthy and Wise.” जैसे-जैसे दिवस का अवसान होता है, वैसे-वैसे पीनियल ग्लैण्ड्स की सक्रियता घटती जाती है। अतः विद्यार्थियों के लिए स्वाध्याय का उत्तम समय प्रातःकाल में माना गया है। वर्तमान परिवेश में आम जनों की जिन्दगी में मानसिक तनाव एवं अवसाद का होना साधारण सी बात हो गई है। सत्त्व, रज एवं तम इन तीन गुणों में से प्रातःकाल में सत्त्वगुण की प्राप्ति होती है और तम एवं

रजोगुण का शमन होता है। अतः हमें मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। कहा जाता है कि रात्रि में चंद्रमा की किरणों के साथ अमृत बरसता है। यह अमृत की वर्षा सुबह में वायु के साथ हमें प्राप्त होती है। इससे शरीर में तेज, ओज, बल, शक्ति, स्फूर्ति एवं मेधा का संचार होता है, चेहरे में कांति आने लगती है। अतः यह वायु वीरवायु कहलाती है। हमें वीरवायु का लाभ अवश्य लेना चाहिए।

प्रातः जागरण के पश्चात् दूसरी क्रिया है — उषा पान। इसके लिए रात्रि काल में तांबे के बर्तन में रात भर रखा हुआ जल उत्तम होता है। यह ध्यान रहे कि यह जल प्रातः काल में 'उत्तर आसन' में अर्थात् उकड़ू बैठकर पीना चाहिए। तत्पश्चात् 'मुख प्रक्षालन', अर्थात् कुल्ला किया जाना श्रेयस्कर है। मुख प्रक्षालन के पूर्व ही उषा पान किया जाना श्रेयस्कर है, क्योंकि मुख प्रक्षालन के पश्चात् उषा पान किये जाने से पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता है। अतः रात्रि काल में सोने से पूर्व अच्छी तरह से दांतों की सफाई कर लेनी चाहिए, ताकि सुबह उषा पान के पूर्व मुख-प्रक्षालन की जरूरत न हो। उषा पान से लाभ यह है कि इससे अर्श, बवासीर, शोथ, सोजिश, ग्रहणी, ज्वर, उदर-रोग, जरा, बुढ़ापा, कोष्ठगत-रोग, मेद-रोग, मोटापा, मूत्राघात, रक्त-पित्त, शरीर के किसी भी मार्ग से होने वाला रक्त स्राव, कान, नाक, गला, सिर

एवं नेत्र रोग, कमर-दर्द तथा अन्यान्य वायु, पित्त, रक्त और कफ आदि बीमारियों में काफी फायदा होता है।

दिनचर्या की अगली कड़ी है — टहलना। खासकर, मानसिक कार्य करने वालों के लिए यह दिनचर्या का सर्वोत्तम भाग है क्योंकि मानसिक कार्य और शारीरिक कार्य में सामंजस्य का होना जरूरी है। सुबह चार से छः बजे के मध्य टहलने का उत्तम समय माना गया है। टहलते समय श्वास-प्रश्वास प्राणायाम को किया जाना लाभप्रद है। श्वास-प्रश्वास वह विधि है जिसमें हम पाँच से सात कदम साँस छोड़ते हुए चलते हैं, पुनः अगले पाँच से सात कदम गहरी साँस लेते हुए चलते हैं। ध्यान रहे कि जितनी अवधि तक साँस छोड़ते हुए चलें, उतनी ही अवधि तक गहरी साँस लेते हुए चलें। इस प्रक्रिया को अपनाने से ऑक्सीजन लेवल बना रहता है। साथ ही, जलोद, मोटापा, पेट में गैस बनना, भूख नहीं लगना, कब्ज, सिरदर्द, जुकाम, खांसी, बुखार इत्यादि विकार धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं। टहलने के पश्चात् की क्रिया है — प्रातः स्नान। गरम पानी से किया जानेवाला स्नान तत्काल स्फूर्तिदायक होता है। कभी-कभी खुले क्षेत्र में स्नान, धूप-स्नान, मृत्तिका-स्नान किया जाना लाभदायक बतलाया गया है।

माना जाता है कि हमारा शरीर पंचतत्व

“क्षिति, जल, पावक गगन, समीरा से बना है और स्नान के दौरान इन तत्वों की पूर्ति सहज ही होती है। इसलिए समुद्र स्नान को सर्वोत्तम स्नान माना गया है, क्योंकि इस स्नान में उपरोक्त पाँचो तत्वों का समावेश होता है। दूसरी श्रेणी में नदी स्नान का स्थान आता है। इसी प्रकार, क्रमशः तालाब स्नान, कूप स्नान, खुले क्षेत्र में किये गये स्नान को भी उत्तम माना गया है, आजकल बाथरूम यानी बंद कमरे में स्नान प्रचलन में है — इसमें पावक अर्थात् धूप

की कमी तो होती ही है, क्षिति, गगन और समीर का भी आंशिक प्रभाव ही प्राप्त होता है। अतः यदि अवसर मिले तो माह में कम से कम एक बार खुले में स्नान जरूर करना चाहिए।

इस प्रकार उत्साहित होकर दिन की शुरुआत करते हुए अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते चलें, तो हमारे वर्तमान जीवन में तो खुशहाली आएगी ही, भविष्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

श्री मनोज कुमार

नं० 5, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

दिवाना

बाल्यकाल से ही सौरभ को गाँव वाले “दिवाना” नाम से पुकारते थे। उसका स्वभाव ही था मस्तमौला, दीवानों की तरह उछल-कूद करनेवाला, लोगों को मनोरंजित करनेवाला, नृत्य करनेवाला। जी हाँ नृत्य/डांस में उसे गहरी रुचि थी। बात उन दिनों की है जब सौरभ दूसरी कक्षा में था। गाँव में त्योहारों पर खासकर रामनवमी में नाटक/ड्रामा का आयोजन किया जाता था। ड्रामा में डाकू और पुलिस पर आधारित कहानियाँ होती थीं। ड्रामा काफी रोमांचकारी होती थी। ड्रामा में एक दृश्य के पश्चात् दिवाना से डांस करवाया जाता था, इससे ड्रामा में लोगों की रुचि बनी रहती थी और वे डांस के बाद अगले दृश्य का इंतजार करते। ऐसा लगता था कि दिवाना का डांस एक स्पेल के बाद न करवाया जाता, तो लोग कुछ देर ड्रामा देखने के बाद अपने-अपने घर चले जाते। दिवाना जब स्टेज पर डांस करता, तो गाने के बोल होते — ‘अरे अंगना में बाबा, दुआरे पे माँ, जाती है क्या धड़के जिया,’ ‘सरकाई लो खटिया जाड़ा लगे,’ आदि। इन गानों पर दिवाना खुलकर मस्ती से डांस करता और दर्शक भी उसके नृत्य को देखकर खूब प्रफुल्लित होते।

अब दिवाना का एक और जोड़ीदार आ गया अकेला। इन दोनों की नृत्य शैली लगभग

एक जैसी होती। दर्शकगण को इनके डांस इतने अच्छे लगने लगे कि वे दूसरे गाँव के ड्रामा में भी आमंत्रित किए जाने



लगे। इन बच्चों (दिवाना और अकेला) के डांस से खुश होकर दर्शक सिर्फ तालियाँ ही नहीं बजाते, बल्कि पारितोषिक के रूप में उनके शर्ट में 10 रु., 20 रु., 50 रु., 100 रु. का नोट पिन से लगा देते। पैसा मिलते ही इन बच्चों का उत्साह दोगुना हो जाता था।

कहानी में मोड़ तब आया जब दिवाना को घर में डांस करने के लिए डांटा गया। घर वाले बोलने लगे कि डांस ही करोगे या पढ़ाई भी करोगे। दरअसल दिवाना डांस में इतना तल्लीन हो गया था कि वह पढ़ाई में बिल्कुल ध्यान नहीं देने लगा था। छोटी उम्र से ही फिल्में देखने का शौक पाल लिया था। उसके घर में टी.वी. नहीं था, इसलिए वह दूसरे के घर फिल्में देखने चला जाता था और देर रात तक लौटता। उसके इन आदतों से घर वाले परेशान होने लगे थे। अब दिवाना कक्षा-6 में पहुँच गया था। एक बार वह गाँव के पास वाले बी०एस०एफ० के सिनेमा टॉकीज चला गया। वहाँ टिकट का किराया 2 रु. था। वह घर से 02 रुपया चोरी कर के सिनेमा देखने भागा था। उसके बड़े भैया को यह बात पता चल

गई। बड़े भैया ने घर आते ही दिवाना के कान ऐंटे और पूछा—‘कहाँ गया था, क्यों गया था?’ ‘दिवाना ने जवाब दिया—गोविंदा की फिल्म लगी थी—आण्टी नं०—1 मुझसे रहा नहीं गया’। दरअसल दिवाना गोविन्दा का बहुत बड़ा फैन था।

गोविन्दा के गानों पर वो ज्यादा झूमकर नाचता था। बड़े भैया ने दिवाना को डाँटते हुए कहा कि गोविन्दा तुम्हारा घर चला देगा। वो अपनी रोजी—रोटी चला रहा है, तुम क्या कर रहे हो। जब तुम्हे पता है कि घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, तो तुम्हें पढ़ाई—लिखाई में ध्यान देना चाहिए था। सिर्फ डांस करने और फिल्में देखने से जीवन नहीं चलता। इन बातों का दिवाना पर थोड़ा—थोड़ा असर होने लगा। वह अब पढ़ाई में थोड़ा—बहुत ध्यान देने लगा। बड़े भैया की बात को उसने समझा और कक्षा में अच्छे अंक भी लेकर आया। किन्तु उसने डांस को छोड़ा नहीं। डांस उसके नस—नस में था।

दिवाना जब कक्षा—10 में पहुँचा, तो उसे मैट्रिक की परीक्षा की चिंता सताने लगी। गाँव वालों ने भी उससे उम्मीद बाँध रखी थी। जहाँ कहीं दिवाना लोगों को मिलता, लोग उसे कहते—दिवाना हमें पूरा भरोसा है कि तुम मैट्रिक की परीक्षा में भी गाँव में अव्वल रहोगे। ऐसी सकारात्मक बातें सुनकर दिवाना भी सोचने लगा मानो वह लोगों की

आकांक्षाओं/भरोसे को टूटने नहीं देगा। आखिरकार वे दिवाना के फैन—फॉलोवर थे। मैट्रिक परीक्षा का रिजल्ट समाचार—पत्र में घोषित हुआ। उन दिनों मैट्रिक परीक्षा का परिणाम समाचार—पत्र में ही लोग देखते थे। दिवाना का परिणाम सिर्फ उसके घर—वालों ने ही नहीं, बल्कि पूरे गाँव वालों ने भी पूरे उम्मीद से देखा। गाँव वालों के भरोसे पर दिवाना खरा भी उतरा। उस परीक्षा में दिवाना प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ, उसके गाँव का कोई अन्य विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं हो पाया था।

दिवाना ने साबित कर दिया था कि डांसिंग करने से उसके पढ़ाई—परिणाम में फर्क नहीं पड़ा। लोगों को समझ में आ गया कि यदि आप पढ़ाई के समय ध्यान लगाकर पढ़ें तो हॉबीज पढ़ाई में रुकावट नहीं डालती।

दिवाना की कहानियों का विकास अभी हो ही रहा है। आने वाले कुछ वर्षों में भी यह जारी रहेगा। कुछ वर्षों में उसके कहानियों को फिर से लिखा जाएगा। आज भी सौरभ को लोग सौरभ न कह कर दिवाना पुकारते हैं। इस नाम से सौरभ को कोई हर्ज भी नहीं है।

श्री संजीव कुमार यादव

क. अनुवादक

दाखिल खारिज

‘मे आई कम इन सर’ — रमेश ने अधिकारी के कमरे में घुसने से पहले आज्ञा मांगी। पूछने के पहले कमरे के बाहर लगा परदा हटा कर वह आश्वस्त हो गया था कि अंदर अधिकारी महोदय अपनी कुर्सी पर विराजमान थे। नजरें मिलने के बाद सर की जुम्बिश की अनुमति को भांप कर वह अंदर दाखिल हुआ, सामने झक सफेद तौलिया से ढके हुए बड़ी-सी कुर्सी पर महोदय फाइल देखने में व्यस्त थे। नजरें उठाकर उन्होंने प्रश्नवाचक दृष्टि से रमेश की ओर देखा। “सर मैंने नयी सड़क इलाके के रामनगर मुहल्ले में जमीन का एक छोटा सा भूखंड खरीदा है। जमीन का निबंधन हो चुका है, अब इसकी दाखिल खारिज करने के लिए आपके पास आया हूँ। यह जमीन से संबंधित कागजात है” — रमेश ने सहमते हुए एक साँस में अपनी बात रखी। बोलने के अंदाज से साहब ने भाँप लिया कि सामने वाला व्यक्ति निहायत ही शरीफ है और शायद सरकारी प्रक्रिया से अनजान भी।

साहब को सरकारी सेवा में आये हुए लगभग पन्द्रह वर्ष हो चुके थे, इन पन्द्रह वर्षों के तजुर्बे ने इंसान की कमोबेश भली-भाँति पहचान करा दी थी। बोलने वाले के लहजे से भाँप लेते थे कि इंसान सरल है या सयाना। सयाने किस्म के व्यक्ति बोलते कम हैं और

घूरते ज्यादा। बोलते भी हैं तो इतने इत्मीनान से मानो हर शब्द को तौल कर वजन के हिसाब से पैसे वसूल करने हों।



स्वर का उतार-चढ़ाव, बातों की गंभीरता के हिसाब से परिलक्षित होता। कभी चेहरे पर मुस्कान तो कभी गंभीरता, शब्दों की गरिमा तय करता और यह सब होता सामने की कुर्सी पर इत्मीनान से बैठने के बाद। बातों में कभी शहद सी मिठास घुलती, तो कभी अपने रसूख का परिचय कराती अक्खड़ता, मानो जता रही हो — ‘काम तो हमारा करना ही होगा’, भले ही तुम कितने भी बड़े अफसर क्यों न हो।’ इसके विपरीत सरल स्वभाव का व्यक्ति लड़खड़ाती जबान में जल्दी-जल्दी अपनी बातों को किसी तरह खत्म करता। सामने बैठना तो दूर, नजरें मिलाने में भी संकोच करता। साहब के व्यक्तित्व के सामने अपने को बौना मानकर ऐसे प्रार्थना करता मानो एक लंबे ग्रीष्म काल से पीड़ित पशु-पक्षी बादलों से मेघ की याचना करते। ‘सरकार और सरकारी तंत्र आम जनता के लिए हैं’ — यह विचार तो इन जैसों के लिए कल्पना से भी परे की वस्तु थी। किसी तरह से भी काम हो जाए तो अपने आपको धन्य-धन्य समझते। वस्तुतः ऐसे लोग ही सरकारी तंत्र के अभीष्ट साधन थे, जिनके माध्यम से ऊपरी आमदनी की मलाई खाई जा सकती थी।

साहब ने इस बात को एक ही नजर में भांप लिया था।

बिना नजर उठाये साहब ने सवाल किया — ‘आप मेरे पास क्यों आए हैं, जाइए बड़ा बाबू से मिल लीजिए’। ‘सर मैं बड़ा बाबू से मिलने गया था, परन्तु वह नहीं हैं, साथ में बैठे महाशय ने बताया कि बड़ा बाबू छुट्टी पर हैं। इसलिए आपके पास चला आया’ रमेश ने सहमते हुए अपनी बात खत्म की।

‘आप देख नहीं रहे हैं’ मैं कितना व्यस्त हूँ। बड़ा बाबू दो दिन के बाद आ जाएंगे, तब मिल लीजिएगा, आपको सारी प्रक्रिया समझा दी जाएगी’ — साहब ने बिना देखे ही फाइल पर नजरें गड़ाए हुए जवाब दिया। यदि इस कार्यालय से संबंधित कोई समस्या हो तो आप बेहिचक कार्यालय अधिकारी से संपर्क कर सकते हैं—यह वाक्य अपने कमरे के बाहर लिखा हुआ साहब के दिमाग में कौंध रहा था, पर यह तो सिर्फ किताबी बातें थीं, यदि सारी प्रक्रिया मैं ही समझाने लगूँ तो मातहतों का क्या काम रह जाएगा, और जब तक भुक्तभोगी दफ्तर के चक्कर न लगाए, तब तक व्यवस्था की महत्ता का अहसास कैसे कराया जाएगा’ — यह सोच साहब के मन में अंदर तक समायी हुई थी।

रमेश अभिवादन कर कमरे से बाहर निकल गया। अब उसे दो दिन के बाद आना था।

तीसरे दिन वह बड़ा बाबू से मिला, अपनी समस्या रखी। बड़ा बाबू के मुँह में पान की गिल्लोरी भरी हुई थी। मुँह से कुछ भी बोलने में असमर्थ थे। इस कार्यालय में इतने सारे लोग आते जाते हैं। कई लोग पान, बीड़ी, सिगरेट भी साथ लेकर आते हैं। अपने शौक के हिसाब से आगंतुक को उपकृत करना भी कर्मचारियों की सेवा का अनिवार्य हिस्सा बन गयी थी। न लेने पर शायद सामने वाले की नाराजगी का खतरा उत्पन्न होने की आशंका थी। फलस्वरूप सभी कर्मचारी सेवा का पूरा मौका देते थे। शायद ही कभी बड़ा बाबू का मुख बिना पान के रह पाता था। इशारे से समझाया — ‘अमुक व्यक्ति से मिल लो, वह सब कुछ समझा देगा।’

अमुक व्यक्ति एक बिचौलिया निकला। उसकी रोजी-रोटी रमेश जैसे लोगों से ँंटे गए पैसों से ही चलती थी। कुछ हिस्सा अपने पास रखकर बाकी ईमानदारी से कार्यालय में जमा कर देता। फिर हर रकम कर्मचारी से लेकर अधिकारी तक ओहदे और काम के हिसाब से बँटते, यह सारी बात बिचौलिये ने संक्षिप्त शब्दों में रमेश को समझा दिया।

“यदि आप दस हजार रुपये दे देते हैं, तो आपका पूरा काम हो जाएगा। आप सारे कागजात मुझे दे दीजिए और घर जाइए, जैसे ही आपका काम होगा मैं आपको खबर कर दूँगा” — दलाल ने रमेश की तरफ चारा फेंका।

“पर इतने पैसे तो मेरे पास अभी नहीं हैं। बड़ी मुश्किल से पाई पाई जोड़ कर किसी तरह जमीन खरीद पाया हूँ, और दस हजार रुपये देने की ताकत नहीं है” — रमेश ने अपनी असमर्थता व्यक्त की।

‘तब ठीक है, जाइये खुद ही अपना काम करवा लीजिए। पर जान लीजिए, यह काम इतना आसान नहीं है। चप्पल की एड़ियाँ घिस जाएँगी और काम धेले भर का भी न होगा। इतने कागजात कार्यालय में मांगे जाएँगे कि आपकी पूरी जिंदगी लग जाएगी उन्हें बनवाने में। सरकारी काम करवाना कोई बच्चों का खेल नहीं है। अच्छे-अच्छों के पसीने छूट जाते हैं, फिर आप किस खेत की मूली हैं। अब इन भाई साहब को ही देख लीजिए’ — उसने इशारे से एक आदमी को बुला कर रमेश से मिलवाया।

“इन भाई साहब ने आप ही की तरह मेरी बात न मानकर खुद ही इस काम को करने की ठानी थी। पहले दो महीने तो ऑनलाईन दाखिल खारिज के आवेदन देने में ही लग गए थे। इनका प्लॉट नम्बर रजिस्ट्री के कागज में 45 (क) लिखा गया था। जब दस्तावेज जमा करने कार्यालय पहुँचे तो कर्मचारी ने बताया कि आवेदन निरस्त हो जाएगा। ऑनलाईन साफ्टवेयर 45 (क) नहीं मानता है, इसे 45/क ऐसे लिखना है। दूसरी बार फिर ऑनलाइन

आवेदन किया। अब चूँकि एक ही आवेदन दो बार दिए जा रहे थे, तो दस्तावेज की तिथि भिन्न कर दी गई, परन्तु इस बात पर कार्यालय ने दोनों आवेदन निरस्त कर दिया। इनका 1 हजार रुपया तो ऐसे ही डूब गया। सोच लीजिए दो महीने में कुछ भी काम न बना और आगे भी काम न होने की पूरी गारंटी थी, क्योंकि दो-दो आवेदन रद्द हो चुके थे। यह तो भला हो तकदीर का, संयोग से मेरी मुलाकात हो गयी और फिर मैंने इनका काम करा दिया। पूछिए इनसे!” — बिचौलिये ने अपनी बात खत्म की। वह आदमी सहमति में सर हिलाता हुआ बोला — “भाई साहब अपने दम पर दाखिल खारिज कराने का ख्याल दिमाग से निकाल दीजिए। यहाँ कदम-कदम पर काँटे बिछे हुए हैं, किस-किस को निकालेंगे आप। यदि आवेदन किसी भी तरह से ठीक से चढ़ भी जाए, तो भी उसके बाद कई अवरोध पैदा किया जा सकता है। विक्रेता की वंशावली की मांग की जाएगी। इस आधार पर आपके आवेदन को खारिज कर दिया जाएगा। वंशावली बनवाना इतना आसान नहीं है। यह अपने आप में एक सम्पूर्ण प्रक्रिया है, जिसके लिए आपको अलग से समय और पैसे खर्च करने पड़ेंगे। हालांकि वंशावली की जरूरत सभी दाखिल खारिज के मामलों में नहीं होती है। यह उन्हीं मामलों में जरूरी है, जिसमें वर्तमान विक्रेता पावर ऑफ अटॉर्नी होल्डर हो और वास्तविक विक्रेता की

मृत्यु हो चुकी हो। परन्तु यह बात आपको कोई बताएगा नहीं और आपकी अर्जी इसके बिना पर निरस्त कर दी जाएगी। लगाते रहिए महीनों दफ्तर के चक्कर”।

रमेश पूरी राम कहानी चुपचाप ध्यानपूर्वक सुनता रहा। बात तो इनकी सही लग रही थी। उसने ऑनलाइन में कितनों के आवेदन – ‘वंशावली संलग्न नहीं की गई है, ‘दर्ज की गई तिथि रजिस्ट्री की तिथि से भिन्न है’ कारण बताते हुए निरस्त हुए देखा था। यहाँ तक कि बिना कारण बताए हुए भी आवेदन निरस्त किये गए थे। उसे यह नहीं समझ में आता था कि जब एक सरकारी कार्यालय दस्तावेजों के आधार पर जमीन की रजिस्ट्री कर सकता था, तो उसी कागजातों से दूसरा कार्यालय कैसे दाखिल खारिज के लिए इंकार कर देता है। जाहिर है यह सारा मामला सुविधा शुल्क, जिसे सीधे शब्दों में रिश्वत कहते हैं, से जुड़ा हुआ था। जिन मामलों में शुल्क नहीं मिलता था, उसे किसी न किसी कारण से या बिना कारण बताए खारिज कर दिया जाता है और जब चढ़ावा चढ़ा दिया जाता, तो उसे स्वीकृत कर लिया जाता। पूरा सरकारी तंत्र शायद इस खेल में संलिप्त है। आखिर ऊपर के अधिकारी भी तो इस व्यवस्था को देख और समझ सकते हैं। कोई भी क्यों नहीं आपत्ति करता है। उसने कुछ दिनों पहले समाचार पत्र में पढ़ा था कि सरकार ने सभी रजिस्ट्री कार्यालयों को निर्देश दिया है, सभी रजिस्ट्री

किए गए मामलों को संबंधित अंचल कार्यालय में भेजा जाए ताकि स्वतः संज्ञान से इनका दाखिल खारिज हो सके। परन्तु यह आदेश सिर्फ दिखावा भर रह गया। आज तक किसी भी मामले का स्वतः संज्ञान नहीं लिया गया और न ही ऊपर बैठे किसी सरकारी अधिकारी ने आदेश के अमलीकरण में दिलचस्पी दिखाई। जाहिर है असरदार पदों पर बैठे राजनेता और अधिकारी गण, सभी यही चाहते हैं कि यह मलाईदार व्यवस्था चलती रहे और सामान्य जनता की जेब लुटती रहे।

भ्रष्ट सरकारी तंत्र का यह खेल रमेश की समझ में पूरी तरह से आ गया था। अब उसके सामने दो ही रास्ते थे। या तो वह खुद भी इस तंत्र का हिस्सा बन जाए। बिचौलिये ने दस हजार रुपये मांगे थे। वह देकर आसानी से अपना काम करा ले अथवा इस भ्रष्ट तंत्र का हिस्सा न बनते हुए ईमानदारी पूर्वक काम करवाये। स्पष्टतः दूसरे रास्ते में अड़चनें बहुत थीं, परन्तु उसकी अंतरात्मा की आवाज चीख-चीख कर कह रही थी— ‘वीर तुम बड़े चलो, धीर तुम बड़े चलो! तुम निडर रुको नहीं, तुम निडर झुको नहीं! आखिरकार उसे अपनी चीखती हुई अंतरात्मा की आवाज के आगे झुकना पड़ा और उसने दूसरे रास्ते पर चलने का फैसला कर लिया।’

श्री आलोक कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अन्तिम उपहार

जैसे ही मैं बस में चढ़ा, अंदर भीड़ देखकर परेशान हो गया, बैठने की जगह नहीं थी। तभी एक व्यक्ति ने अपनी सीट खाली कर दी। खाली सीट के बगल में खड़ा आदमी वहाँ बैठ सकता था, लेकिन इसके बजाय उसने मुझे सीट की पेशकश की।

अगले पड़ाव पर फिर वही काम हुआ। उसने अपनी सीट दूसरे को दे दी। पूरी यात्रा के दौरान 4 बार ऐसा हुआ। वह आदमी एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह लग रहा था, दिन भर काम करने के बाद घर लौट रहा था।

आखिरी पड़ाव पर जब हम सभी उतर गए, मैंने उससे बात की।

“हर बार खाली सीट मिलने पर आप किसी अन्य व्यक्ति को अपनी सीट क्यों दे रहे थे?”

उनका जवाब मुझे आश्चर्यचकित कर गया।

“मैंने अपने जीवन में बहुत अध्ययन नहीं किया है और न ही मुझे बहुत सी बातें पता हैं। मेरे पास बहुत पैसा नहीं है। मेरे पास किसी को देने के लिए बहुत कुछ नहीं है। इसीलिए मैं यह रोज़ करता हूँ। यह एक ऐसी चीज़ है, जो मैं कर सकता हूँ, बल्कि आसानी से कर सकता हूँ।”

“पूरे दिन काम करने के बाद भी मैं थोड़ी देर तक खड़ा रह सकता हूँ। मैंने अपनी सीट

आपको दे दी और आपने धन्यवाद कहा। इससे मुझे संतोष हुआ कि मैंने किसी के लिए कुछ किया है।”



मैं इसे दैनिक तौर पर करता हूँ और महसूस करता हूँ कि मैं किसी तरह से अपना योगदान दे रहा हूँ। मैं हर दिन घर में ताजा और खुश होकर आता हूँ कि मैंने किसी को कुछ दिया।”

मैं अवाक् था! दैनिक आधार पर किसी के लिए कुछ करने की चाहत ही अंतिम उपहार है।

इस अजनबी ने मुझे बहुत कुछ सिखाया: भीतर से अमीर बनना कितना आसान है।

सुंदर कपड़े, बैंक खाते में बहुत सारे पैसे, महंगे गैजेट्स, सामान और विलासिता या शैक्षणिक उपाधियाँ—आपको अमीर और खुश नहीं कर सकते हैं, परन्तु देने का एक छोटा सा कार्य आपको हर रोज़ समृद्ध और संतुष्ट महसूस करने के लिए पर्याप्त है।

श्री बालमुकुन्द पाठक
लेखापरीक्षक

एक राज्य, एक खेल

जापान की राजधानी टोक्यो में इस साल जुलाई-अगस्त में ओलंपिक खेलों का आयोजन हुआ। 1896 ई० में ग्रीस में आधुनिक ओलंपिक खेलों का आगाज हुआ था। भारत ने 1920 ई० में पहली बार आधिकारिक तौर पर ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था। इस लिहाज से भारत ने इस साल अपने ओलंपिक अभियान के 100 साल पूरे कर लिए हैं। 1900 ई० के पेरिस ओलंपिक में नार्मन पिचार्ड ने ब्रिटिश शासन वाले भारत के लिए पुरुषों की 200 मीटर बाधा दौड़ में रजत पदक जीता था। पिचार्ड ब्रिटिश शासन के नुमाइंदा थे। इसी कारण ओलंपिक इतिहासकार पिचार्ड के प्रदर्शन को भारत के पदकों में शामिल नहीं करते। 1900 ई० से 2016 ई० तक ओलंपिक में भारत ने नौ स्वर्ण पदक समेत कुल 28 मेडल जीते हैं।

टोक्यो ओलंपिक में इस साल भारत के 127 एथलीट ने हिस्सा लिया। यह ओलंपिक में भारत का अब तक का सबसे बड़ा दल है। इस साल भारत ने 1 स्वर्ण, 2 रजत और 4 कांस्य जीते हैं। चीन ने 21 स्वर्ण, 13 रजत और 12 कांस्य जीतकर पहला स्थान पाया है और भारत 48वें स्थान पर है। भारत और चीन पड़ोसी देश हैं; दोनों क्षेत्रफल में बड़े और बड़ी आबादी वाले

देश हैं, दोनों तेजी से आगे भी बढ़ रहे हैं, लेकिन जब बात ओलंपिक खेलों की होती है, तो चीन भारत से बहुत आगे है।



पीटी उषा ने ट्रैक एंड फील्ड में दुनिया भर में अपना लोहा मनवाया है, लेकिन वो ओलंपिक पदक नहीं जीत सकीं। आम तौर से भारत के नागरिक और नेता हर मैदान में अपनी तुलना चीन से करते हैं और अक्सर चीन की तुलना में अपनी हर नाकामी को चीन के अलोकतांत्रिक होने पर थोप देते हैं, लेकिन ओलंपिक खेलों में अमेरिका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे लोकतांत्रिक देश भी बड़ी ताकत हैं। चीन और हिंदुस्तान की जनसंख्या लगभग समान है और हमारी अधिकांश चीजें भी समान हैं। चीन के खिलाड़ियों की ट्रेनिंग साइंटिफिक और मेडिकल साइंस के आधार पर ज़्यादा ज़ोर देकर करवाई जाती है, जिससे वो पदक प्राप्त करने में कामयाब रहे हैं। खेलों से जुड़े लोगों से बातचीत के आधार पर भारत की नाकामी का दोष खिलाड़ियों को पूरी तरह से नहीं दिया जा सकता। उनके विचार में भारत की गंभीर कमियों में से अधिकतर के बारे में लोगों को पता है और वो है :— खेल संस्कृति का अभाव, पारिवारिक-सामाजिक भागीदारी की कमी,

सरकारों की प्राथमिकता नहीं, खेल फेडरेशनों पर सियासत का हावी होना, खेल इन्फ्रास्ट्रक्चर और डाइट की कमी, गरीबी और खेल से पहले नौकरी प्राथमिकता। इनमें कुछ कमियों को आमिर खान ने अपनी कामयाब फिल्म 'दंगल' में बहुत अच्छे तरीके से कहानी में पिरोया है।

यदि भारत में विभिन्न राज्यों को विभिन्न खेलों के लिए उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में विकसित किया जाए, तो भारत अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बेहतर प्रतिस्पर्धा कर सकता है। दो अर्थशास्त्री, बर्नार्ड ए0बी0 और बुस्से एम0आर0 ने 'द रिव्यू ऑफ इकोनॉमिक्स एंड स्टैटिस्टिक्स (फरवरी 2004) में एक पेपर में यह स्थापित करने की कोशिश की कि कुल जीडीपी राष्ट्रीय ओलंपिक प्रदर्शन मापने का सबसे अच्छा तरीका है। तब से कई अध्ययनों ने उन कारकों को समझने का प्रयास किया है, जो किसी राष्ट्र की ओलंपिक में पदक जीतने की क्षमता को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। रियो ओलंपिक के बाद ऐसा ही एक सर्वेक्षण दिखाता है कि प्रति सौ अरब डॉलर पर पदकों की संख्या कुछ कैरेबियाई क्षेत्रों में सबसे ज्यादा है और वहीं एशियाई और कुछ अफ्रीकी देशों में यह सबसे कम है। ये परिणाम काफी हद तक इस परिकल्पना को नकारते हैं कि कुल सकल घरेलु उत्पाद से ओलंपिक में किसी राष्ट्र के प्रदर्शन का पता लगाया जा सकता है। एक राष्ट्र में जीवन स्तर का औसत स्तर और

देश की जनसंख्या का आकार ओलंपिक में उसके प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण निर्धारक हो सकते हैं। आनुवंशिक कारक भी महत्वपूर्ण हैं। कुछ देश कुछ खेलों में आगे होते हैं, जैसे अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया के लोग तैराकी में बहुत अच्छे होते हैं क्योंकि उनकी लम्बाई ज्यादा होती है, तो उन्हें इससे तैराकी में मदद मिलती है। चीन के लोगों की लम्बाई कम होती है तो वे निशानेबाजी, टेबल टेनिस में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। विश्व स्तरीय प्रशिक्षण एवं संसाधन जुटाने से खिलाड़ियों को बढ़त मिलती है। गरीब देशों के लिए इस तरह का बुनियादी ढाँचा बनाना एक प्रकार से विलासिता के समान है। औपनिवेशिक शासन के दौरान, भारत को कई एशियाई और अफ्रीकी देशों की तुलना में पहले अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों से कुछ अनुभव मिला। उदाहरण के लिए, कलकत्ता फुटबॉल लीग एशिया की सबसे पुरानी फुटबॉल लीग है। डुरंड कप एशिया का सबसे पुराना मौजूदा फुटबॉल टूर्नामेंट है। इस प्रदर्शन ने भारत को 1950 और 1960 के दशक की शुरुआत में 'तीसरी दुनिया' के अन्य देशों पर बढ़त दिलाई। हम विभिन्न राज्यों को खेलों के लिए उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में विकसित कर सकते हैं। अलग-अलग राज्यों के लोगों की खान-पान की आदतें और बनावट अलग-अलग होती हैं। उस क्षेत्र के लोगों के

झुकाव और उनकी आदतों और निर्माण के आधार पर देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न खेलों के लिए प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे का विकास करना असंभव नहीं है। जैसे झारखण्ड में निशानेबाजी, हॉकी लोगों को काफी पसंद है, हरियाणा में बॉक्सिंग का लगाव है। जब तक

हम अंतर्राष्ट्रीय खेलों के लिए क्षमता दिखाने वाले बच्चों को तैयार करना शुरू नहीं करते, भारत शायद ही ओलंपिक में सफल हो सकता है। केवल व्यक्तिगत प्रतिभा ही भारत को आगे नहीं ले जा सकती। 'एक राज्य, एक खेल' की नीति भारत में गेम-चेंजर साबित हो सकती है।

सुश्री नेहा कुमारी

पिता : बीरेन्द्र यादव

(वरीय लेखापरीक्षक)

हिन्दी के संवर्धन में मेरे प्रयास

आज तक मैंने जिस कार्यालय में भी काम किया है, वहाँ यह कोशिश की है कि लोग अंग्रेजी का मोह त्याग सकें और हिंदी को प्रोत्साहन मिले।

एक कार्यालय में जनसंपर्क बहुत ज्यादा होता था। आजकल लोगों को अंग्रेजी बोलने का कुछ ज्यादा ही शौक चर्चाया हुआ है। जो आता.....चटर-पटर अंग्रेजी में बोलता।

मैं उससे पूछती, "आप अनपढ़ हो?"

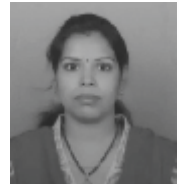
"नहीं! हम तो पढ़े-लिखे हैं।"

"यदि आप पढ़े-लिखे हैं, तो मैं चाहूँगी कि आप हिंदी में बात करें। यदि अनपढ़ हैं, तो कोई बात नहीं, अंग्रेजी में बात कर सकते हैं।"

यह सुनकर लोग इतना शर्मिंदा होते थे कि धीरे-धीरे अंग्रेजी में बात करने की आदत त्यागने लगे और हिंदी में बात करने की आदत डालने लगे। रोजाना कम से कम 300 लोगों से वास्ता पड़ता था।

कमरे में हमने एक गुल्लक रख ली थी। एक कमरे में हम पाँच लोग बैठते थे। सभी से कहा कि अंग्रेजी त्यागो और अपनी भाषा में बात करो। जो भी अंग्रेजी में बोलेगा, वह प्रति शब्द एक रूपया जुर्माना देगा। आमतौर पर अंग्रेजी के बहुत सारे शब्द ऐसे हैं, जो हमारी आम बोलचाल की भाषा में इस तरह से घुल-मिल गए हैं कि हमें यह पता नहीं लग पाता कि यह अंग्रेजी का शब्द है या फिर हिंदी का। उसके

लिए मैंने उन्हें बोल दिया कि स्कूल को विद्यालय, ट्रेन को लौहपथगामिनी, साइकिल को द्विचक्रवाहिनी बोलने की जरूरत



नहीं है। इन शब्दों को स्कूल, ट्रेन, साइकिल बोल सकते हैं, लेकिन बीच-बीच में बेमतलब के अंग्रेजी शब्द बोलने की सख्त मनाही है।

उन दिनों बड़ा मजा आता था। कोई न कोई अनजाने में अंग्रेजी का शब्द बोल देता था और मैं उसके नाम के आगे 1 + 1 + 1 + 1 + 1 लिखती रहती थी और शाम को उसे, उसी हिसाब से गुल्लक में पैसे डालने पड़ते थे। हँसते-हँसते काम करते-करते दिन कैसे बीत जाता था, मालूम ही नहीं पड़ता था। अब तो सभी को इसमें बड़ा मजा आने लगा था और मुझे भी अच्छा लगने लगा कि इसी बहाने खेल-खेल में और मजे लेकर अपनी राष्ट्रभाषा के संवर्धन में कुछ योगदान कर रहे हैं।

हमारे ही कार्यालय में एक दक्षिण भारतीय सहयोगी भी थे। वैसे हिंदी समझ भी लेते थे और बोल भी लेते थे। एक दिन किसी के विवाह का निमंत्रण-पत्र आया था। कार्यालय में पूरे स्टाफ के नाम से एक ही निमंत्रण-पत्र दिया जाता था और पूरे स्टाफ की तरफ से शगुन इकट्ठा करके स्टाफ सेक्रेटरी दो चार लोगों के साथ शगुन दे आता था। जिसको अलग से निमंत्रण मिलता था, वह अलग से शगुन देता था।

जिस दिन शादी थी, उस दिन हमारे उन दक्षिण भारतीय सहयोगी ने काम करते-करते अचानक पूछा— “मैडम, आज कितने बजे का क्रियाकर्म है?”

मैं एकदम घबरा गई कि हमारे किसी साथी के साथ ऐसा क्या कुछ घटा है जो मुझे मालूम तक नहीं है! घबराते हुए मैंने उससे कहा, “बता क्या हुआ?” “कुछ नहीं हुआ मैडम। बस यह पूछ रहा हूँ कि कितने बजे का क्रियाकर्म है?” “अरे! पहले यह तो बता कि किसको क्या हुआ है? जल्दी बता। अब घबराहट शुरू हो गई है!”

“इसमें घबराने की क्या बात है?”

“अरे भई! जल्दी बता कि किसको क्या हुआ है? साँस गले में अटकी हुई है।” मेरी घबराहट देखकर बोला: “मैडम जी! वो परसों जो शादी का कार्ड आया था न, उसका क्रियाकर्म कितने बजे का है, वह पूछ रहा हूँ।”

तब बात समझ में आई और मुझे बड़ी हँसी भी आई। मुझे हँसते हुए देखकर उसने पूछा: “मैडम, इसमें हँसने वाली क्या बात है? आपको इतनी हँसी क्यों आ रही है?”

“तुमने बात ही ऐसी की है हँसने वाली।”

“क्यों? मैंने ऐसी क्या बात की है, जो आपको इतनी हँसी आ रही है?”

“तुमने जो कहा, यदि वही शब्द तुम शादी वाले घर में जाकर बोलोगे तो हम तो छित्तर खायेंगे ही, पर बेटा तुम्हें तो मार-मारकर बिल्कुल टकला करके ही भेजेंगे।”

“क्यों मारेंगे? जो आप कह रही हैं, वही तो मैं भी कह रहा हूँ।”

“शादी के कार्यक्रम को कार्यक्रम कहते हैं, क्रियाकर्म नहीं कहते।”

“वही तो मैं भी कह रहा हूँ जो आप कह रही हैं... क्रियाकर्म।”

“क्रियाकर्म नहीं, कार्यक्रम।”

“वही तो कह रहा हूँ... क्रियाकर्म”

“अच्छा बाबा! माफ करो। तुम प्रोग्राम बोलो।”

“फिर आप जुर्माना लगा दोगी।”

“इस बार का तुम्हारा जुर्माना माफ! आगे से याद रखना कि कभी भी किसी की शादी हो तो यह पूछना कि क्या प्रोग्राम है। तुम पर कोई जुर्माना नहीं लगेगा।”

(मेरा अपना मानना है कि ऐसे छोटे-छोटे प्रयासों से हम अपनी भाषा का संवर्धन कर सकते हैं। ऑनलाईन गोष्ठी में विचार-विमर्श न करके केवल एक मिनट में अपनी रचना सुनाकर हम अपनी भाषा का प्रसार नहीं कर सकते। यह तो मात्र दिखावा है।)

श्रीमती आरती पाठक

पत्नी : श्री बालमुकुन्द पाठक
(लेखापरीक्षक)

पापा गंदे हो गये हैं।

एक बार मैं, मम्मी—पापा और मेरी छोटी बहन—गरिमा पार्क में घूम रहे थे। पापा ने हम दोनों बहनों के लिए चॉकलेट खरीदा। चॉकलेट का लुत्फ उठाते हुए हम सभी खुशी—खुशी घूम रहे थे। अचानक गरिमा के हाथ से चॉकलेट जमीन पर गिर पड़ा। उसने लपककर चॉकलेट को जमीन पर से उठा लिया। मम्मी ने डांटा और समझाया—बेटा! गिरी हुई चीजों को नहीं उठाते। यह चॉकलेट अब गन्दा हो गया है, उसे फेंक दो। गरिमा को यह बात अच्छे से समझ में आ गई और उसने चॉकलेट को फेंक दिया और जेब से निकालकर दूसरा चॉकलेट खाने लगी।

थोड़ी देर बाद अचानक पापा के पैर में ठोकर लगी और वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़े। मम्मी लपककर उन्हें उठाने लगी। तभी मेरी छोटी बहन गरिमा जोर—जोर से चिल्लाने लगी 'मम्मी—मम्मी! गिरी हुई चीजों को नहीं उठाते। पापा को मत उठाओ, अब वह गंदे हो गये हैं'।



सुश्री निष्ठा पाठक (कक्षा-5)

पुत्री श्री बालमुकुन्द पाठक
लेखापरीक्षक

बंदिनी

मन में स्वप्न संजोए,
आज की कुंवारी
हृदय की धरती में
बीज बोती बिचारी,
राम जैसा पति पाकर
सीता बन जाऊँगी।
छोटे से घरोंदे में
बन्द यह कुंवारी
अनुभव से हीन
यह बंदिनी बिचारी।
शिक्षा की अभिलाषा
रह गई अधूरी,
बाल विवाह के सात फेरे
लगाती यह बिचारी
घूँघट की सीमा में
बंध गई यह बंदिनी दुलारी।
पैरों में पड़ गई बेड़ियाँ
घर से बाहर तक
अब हर मोड़ पर,
भेड़िया ही भेड़िया
सुबह से रात तक सबकी
चाकरी बजाती यह नारी
मन में सदा आशंका
व भय से पीड़ित बिचारी
पुरुष के हर रूप को

अभिनन्दन करती यह नारी
लज्जा व शालीनता की
हर नियम पालन करती
यह बंदिनी बिचारी।

ऊपर से मुस्कुराती
अन्दर से जल रही चिन्गारी
हीन भावना से ग्रस्त
अपनों से उबी-सी व
जीवन से थकी यह नारी।

दया व प्यार की बोल
के लिए, तरसती यह नारी
स्नेह पाने हेतु बनी
रहती, सदा भिखारी
आशा से विमुख होती
यह नारी, बंदिनी बिचारी
कहीं दहेज के लिए
जलायी जाती यह नारी।

कहीं हवस की शिकार
से, दामिनी बनती है
यह बंदिनी बिचारी।
यह बंदिनी बिचारी



श्री शम्भु शरण भारती
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

निराली शाम

शाम की बात, बड़ी निराली है,
खुद में यह मदमस्त, मतवाली है,

दिन खत्म हो आया,
बस यह बताने आयी है
कि, जो चले थे, घर से दूर
दाने की खोज में,
लौट चलो वापस घर को,
ये बताने आयी है,
दो पल खुद को भी दे दो
थोड़ी चैन की साँस, तुम ले लो।

वो सब जो, तुम्हारे अपने हैं
वो सब जो, तुम्हारे सपने हैं
एक बार फिर उन्हें संजो लो
जो करे दिल तुम्हारा, तो हँस लो
गा लो या रो लो।

कमजोर नहीं तुम,
तुममें सारी शक्ति है
अरे ये सब भावनाओं की
अभिव्यक्ति है।

निःसंकोच होकर पग, धरो तुम
कल फिर नया सवेरा आएगा
नई उम्मीदें, नई तरंग लाएगा।
कल फिर, नई लड़ाई होगी।
किन्तु डर कैसा, असमंजस कैसी,
यही तो, अपना कर्तव्य है
नहीं पता, तो नहीं सही
पर इसी पथ पर
अपना गंतव्य कहीं है

थक गये होगे,
थोड़ी साँस भर लो, तुम।
हो गई शाम,
अब घर चलो तुम,
अब घर चलें हम॥



श्री शम्भु शरण भारती
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वगोलीय दर्शन

बादलों के बीच झांकते हुए
एक सितारे को हमने देखा था,
अवरोध की झुंझलाहट नहीं
एक नये सामीप्य का सवेरा था।

टिमटिमाती किरणों के सायों में
सुदूर प्रकाश पिंड की आँख मिचौली थी
आवरण के साहचर्य से अभिभूत
दो नूतन मित्रों की हंसी ठिठोली थी।

मंद—मंद मुस्कुराते हुए
चंद्रमा की मनमोहक भाव भंगिमा थी,
मिलन और जुदाई की पीड़ा से परिचित
मित्रवत अठखेलियों की सुखद अनुभूति थी।

वेगपूर्ण पवन के झोकों से,
निष्ठुर वियोग की पीड़ा थी,
आच्छादित आवरण के हट
जाने से,
स्वच्छंद यौवन की परम
प्राप्ति थी।

नितान्त अकेलेपन के अहसास से,
सितारे की खीज भरी अकुलाहट थी,
क्षण भर पहले प्राप्त स्वच्छंदता से
पीछा छुड़ाने की छटपटाहट थी।

गगन मंडल की इन घटनाओं के बीच
एक बालक की किलकारित अभिव्यक्ति थी,
अबोध अवचेतन मन में अंकित
एक गंभीर जीवन दर्शन की परिणति थी।



यायावरी

छोटे—छोटे पड़ावों को पार करता हुआ,
एक नई मंजिल की तलाश में निकल पड़ा हूँ,
मन के दुर्बल भावों को दबाता हुआ,
अनजानी राहों पर चल पड़ा हूँ।

नई—नई चुनौतियाँ आती हैं राहों में,
पर मैं इनसे कब डरा हूँ,
विश्वास की नाजुक सी डोर थामे,
अपनी राहों में मजबूती से डटा हूँ।

अनुभवों की विरासत संजोए हुए,
अपने इरादों पर अडिग टिका हूँ,
छोटी—छोटी बाधाओं से पार पाता हुआ,
लो कितनी दूर आकर अब रुका हूँ।

कुछ पलों का ठहराव है यह,
यायावरी का अंत नहीं,
कदमों को जो कर सके बोझिल,
किसी बेड़ियों में वो दम नहीं।

श्री आलोक कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए



बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए।

मची खलबली और हाहाकार चाहिए।

यूँ तो जीते हैं कई जंग हमने, मगर

कर दे जो लहलुहान,

ऐसा कोई हुंकार चाहिए।

प्यार इज्जत सम्मान बहुत पाया हमने, मगर

झंझोड़ दे जो अंतर्मन को, ऐसा कोई

तिरस्कार चाहिए।

यूँ तो भीड़ में टहलता हूँ हर रोज, मगर

सरपट जो दौड़ा दे, अकेलापन ऐसा कोई

बेशुमार चाहिए।

बाहरी संगीत नहीं, भीतरी झंकार चाहिए

मची खलबली और हाहाकार चाहिए।

श्री निशिकांत कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (त०)

समय

परिवार वाले कहते हैं,
तुम्हारे पास समय ही समय है.....
दिन भर करती क्या हो.....
मेरे पास कोई उत्तर नहीं.....
मैं चुप ही रही....

समाचार पत्र पर जब तक,
एक नजर न मार लूँ.....
चैन नहीं पड़ता.....
मेरे हाथों से न्यूजपेपर,
पति-महोदय यह कहकर ले लेते.....
यह पेपर....

दिन भर तुम्हारे पास ही पड़ा रहेगा.....
जब चाहे पढ़ लेना!!
मैं चुपचाप रसोई की तरफ बढ़ चली.....
जब कोई कहता है....

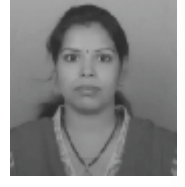
तुम्हारे पास समय ही समय है,
दिन भर करती क्या हो.....
तब मैं मन ही मन,
जोर-जोर से हँसती हूँ!!
मेरे पास समय है....

पर उस समय पर,
पति का
बच्चों का....
सास-ससुर का.....
लोकल बसी ननदों का अधिकार है...मेरा
नहीं.....

जो कई बार कोशिश की थी,
इन समय में से थोड़ा समय चुरा लूँ.....
तब इसी परिवार, इन्हीं अपनों ने,
कई-कई तोहमतें जड़ दीं!
कैसे कहूँ...!!

बोलने से ज्यादा कष्ट चुप रहने में होता है..
दिन में कई दफा मन मसोस के रह जाती...
..

चलो कोई बात नहीं....
आज नहीं तो कल,
मेरे पास भी मेरा अपना समय होगा!



श्रीमती आरती पाठक
पत्नी-श्री बालमुकुन्द पाठक
लेखापरीक्षक

अप्रैल, 2020 से मार्च, 2021 तक सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम (सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्त तिथि	अभ्युक्ति
1.	चन्द्र शेखर प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31.10.2020	सेवानिवृत्त
2.	महादेव कर्माकर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30.11.2020	सेवानिवृत्त
3.	सुरेन्द्र नारायण	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2020	सेवानिवृत्त
4.	सीता राम देव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2021	सेवानिवृत्त
5.	बिरेन्द्र कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2021	सेवानिवृत्त
6.	पवन कुमार वर्मा	लिपिक	31.01.2021	सेवानिवृत्त
7.	जय प्रकाश सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2021	सेवानिवृत्त
8.	सिध नाथ प्रधान	स्टाफ ग्रेड अभिलेखपाल	28.02.2021	सेवानिवृत्त
9.	राकेश कुमार सिन्हा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2021	सेवानिवृत्त
10.	मिथिलेश कुमार द्विवेदी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28.02.2021	सेवानिवृत्त
11.	बिन्देश्वर दास	लेखापरीक्षक	28.02.2021	सेवानिवृत्त
12.	रजनी कांत वर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2021	सेवानिवृत्त

01.04.2020 से 31.03.2021 की अवधि में सेवा के दौरान दिवंगत कर्मचारियों / अधिकारियों की सूची :

क्र.सं.	नाम	पदनाम	मृत्यु तिथि
1.	स्वपन कुमार डे	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	16.04.2020
2.	बसन्त कुमार तिग्गा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	13.09.2020
3.	अमरेन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	08.10.2020
4.	किरण कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	10.01.2021

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित स्मरणीय तथ्य

1. यह कार्यालय राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित किया जा चुका है। अतः हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सभी कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाना अनिवार्य है।
2. अनुभागों द्वारा भेजे जाने वाले प्रतिवेदन प्रत्येक तिमाही के समाप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर हिन्दी अनुभाग को भेजा जाना अनिवार्य है।
3. विभिन्न कार्यालयों से हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाने अनिवार्य हैं।
4. इस कार्यालय से “क” एवं “ख” क्षेत्र स्थित राज्य सरकार के किसी कार्यालय अथवा व्यक्तियों को पत्रादि शत-प्रतिशत हिन्दी भाषा में ही भेजे जाने अनिवार्य हैं।
5. संसदीय निरीक्षण प्रश्नावली के संदर्भ में अनुभागों द्वारा भेजे जाने वाले तिमाही प्रतिवेदन में “क”, “ख” एवं “ग” क्षेत्र स्थित केंद्रीय सरकार के किसी भी विभाग को भेजे गये पत्रों की संख्या संलग्न करना अनिवार्य है।
6. “क” क्षेत्र—बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, और उत्तराखण्ड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, और अण्डमान तथा निकोबार द्वीप संघ शासित राज्य
“ख” क्षेत्र—गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब तथा चण्डीगढ़, दमन दीव तथा दादरा एवं नागर हवेली संघ शासित राज्य।
“ग” क्षेत्र— “क” एवं “ख” क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ शासित क्षेत्र।
7. राजभाषा अधिनियम 1963 के धारा 3 (3) के अंतर्गत इस कार्यालय से निर्गत सभी संकल्प, सामान्य, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक एवं अन्य प्रतिवेदन, प्रेस-विज्ञप्तियाँ, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी एवं हिन्दी दोनों में जारी किया जाना अनिवार्य है।

(हिन्दी अनुभाग द्वारा कार्यालय हित में जारी)

अनुकरणीय उक्तियाँ

- शिक्षा का उद्देश्य अज्ञानता से ज्ञान की ओर यात्रा कराना है।
- ज्ञान का अंकार ही सबसे बड़ी अज्ञानता है।
- आचरण और वाणी का तारतम्य ही जीवन की सार्थकता है।
वाणी के चार दोष हैं, इनसे बचें –
 - कठोर भाषण
 - मिथ्या भाषण
 - परनिन्दा
 - अनर्गल प्रलाप
- मानवता का पालन करना ही मनुष्य का सबसे सहज एवं सरल धर्म है।
- अपनी आदतों को सही ठहराने के बजाय सही आदतों को अपनी जिन्दगी का हिस्सा बनाये



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), राँची
Office of the Principal Director of Audit (Steel),
Ranchi - 834002

"हमारा कार्यालय हिंदी पत्राचार का स्वागत करता है।"

स. ई/हिंदी/राजभाषा हिंदी पत्रिका/समीक्षा/2021-2022/1999/2/33

दिनांक:

3 DEC 2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ),
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा),
झारखण्ड,
राँची-834002

विषय: कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका "उदयाचल" के 37 वें अंक की पावती की सूचना हेतु

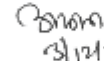
महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय से संबंधित आपके पत्रांक-प्र.मले.(ले.प.)/हि.प्र./2021-22/338, दिनांक-22/10/2021 के साथ हिंदी पत्रिका - "उदयाचल" के 37 वें अंक की एक (01) प्रति प्राप्त हुई। सादर धन्यवाद।

हिंदी पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं अत्यंत रोचक, मनोरंजक एवं जानवर्धक हैं। श्री विजय किशोर प्रसाद द्वारा लिखित लेख- "रिश्ता सिमरण का", श्री आलोक कुमार द्वारा लिखित निबंध "पानी और तीसरा विश्व युद्ध", श्री विकास चन्द्र आजाद द्वारा लिखित लेख "काल के वितान पर भारतीय नारी शिक्षा" एवं कविताएं जैसे श्री आलोक कुमार द्वारा लिखित कविता - "हसरत-ए-दिलर" तथा श्री दिलीप कुमार मिश्रा द्वारा लिखित कविता "आग्रह" एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। साथ ही कार्यालय की गतिविधियों एवं राजभाषा हिंदी से जुड़ी सभी लेख तथा चित्र अत्यंत प्रासंगिक और मनोरम हैं। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं और शुभेच्छाएँ हैं।

H.C.
No. 126
dt. 20/12/21

भवदीय,


31/12/2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा0

Ph : +91-651-2482184, 2480295
FAX : +91-651-2480285

MECON Building, Doranda, Ranchi - 834002
E-mail : pdasteelranchi@cag.gov.in



कार्यालय प्र. महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T.
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2702174, फैक्स 0172-2703110
क्रमांक:-हिन्दी वक्षा/समीक्षा/2021-22/244
दिनांक:-15.11.2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखण्ड, राँची - 834001।



विषय - विभागीय पत्रिका 'उदयाचल' के 37वें अंक की समीक्षा।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका उदयाचल का वर्तमान 37वां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, आस्युक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री विजय किशोर प्रसाद का लेख 'रिश्ता सिमरण का' एक सच्ची साहित्यिक कृति है जो समाज के नारी के प्रति कुठित व संकुचित दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है। श्री मनोज कुमार का 'शारीरिक गतिशीलता की एक कड़ी-परिक्रमा' मन तन को प्रफुल्लित करने वाला रुचिकर लेख है। श्री बालमुकुंद पाठक द्वारा रचित 'इश्क' एक सहज अभिव्यक्ति से ओतप्रोत युवावस्था के दिशाहीन पथ एवं अनुचित निर्णयों की वास्तविकता का परिचायक है तथा इसके साथ ही श्रीमति आरती पाठक का 'प्रेरक प्रसंग' लेख भी उच्चकोटि स्तर का है।

श्री आलोक कुमार की 'गायब हो जाती है कहीं यह रुहें' कविता जीवन यात्रा को अति मर्मस्पर्शी शब्दों में व्यक्त किया है। श्री निशिकांत कुमार की 'जिंदगी', श्री दिलीप कुमार मिश्र की 'आग्रह' तथा श्री अभिषेक कुमार की 'हमारी अनमोल कामनाएँ' कविताएँ अति सवेदनशील, मर्मस्पर्शी तथा रुचिकर होने के साथ-साथ सराहनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

H.C.
No. 124
Dt. 20/12/21.

भवदीया

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी वक्षा)



क्र.गो.क/हिन्दीकक्ष/पावती/नई/क-18/011-121

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT

Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक:

Date: 14.12.2021



सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, रांची

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।

संदर्भ:- प्र.म.ले.(ले.प.)/हि.प्र./2021-22/379 दिनांक:22.10.2021

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "उदयाचल" का 37वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

B. Sahu

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - मांडर, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 493 111 (छत्तीसगढ़)

Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)

फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

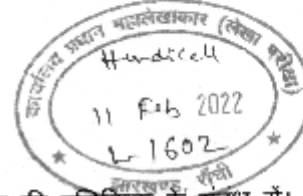


साधारण डाक द्वारा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.



सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2021-22/57
दिनांक:24-11-2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखंड, राँची



विषय:- हिंदी गृह-पत्रिका "उदयाचल" के 37 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "उदयाचल" के 37 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषय के अनुसार रचना का बहुत ही सुंदर वर्णन किया है, जो निसंदेह हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर कार्यालय का चित्र एवं पानी गिरते हुए झरने का चित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका के मुख पृष्ठ को आकर्षक बनाता है। पत्रिका का कलेवर एवं साज-सज्जा बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका भीतरी पृष्ठों के रंगीन होने के पश्चात और भी आकर्षक रहेगी। कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रयास का कार्य बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अगसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय

(एस.जे. पारेख)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

H.C.
No. 148
dt 11/02/22
2022

U.D.
Hindi cell
Audit

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in		INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU, 361, ANNA SALAI, CHENNAI-18 Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562 Website : www.agae.tn.nic.in
---	---	---

24 → CH
01/12/2021

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, राँची - 834002

Hindi Officer
Office of the Principal Accountant General
(Audit)
Jharkhand, Ranchi - 834002



हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 89 दिनांक 01/12/2021
3490.

विषय : आपकी हिंदी गृह पत्रिका 'उदयाचल' के 37वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'उदयाचल' का 37वाँ अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से राजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, मानवद्वंद्व, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित सुश्री नेहा कुमारी द्वारा रचित लेख 'इंडिया बनाम भारत', डॉ. तल्लन ठाकुर द्वारा रचित 'महामानव-सृष्टि की विचित्र कहानी' तथा श्री आलोक कुमार द्वारा रचित लेख 'पानी और तीसरा विश्व युद्ध' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। श्री कुन्दन कुमार का लेख 'बिहार का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल: गया' बिहार के इतिहास एवं भूगोल के विषय में अच्छी जानकारी प्रदान करता है। श्री आलोक कुमार की कविता 'गायब हो जाती हैं कहीं यह रुहें' रहस्यवादी काव्य की दिशा में एक सार्थक कदम है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

Hindi cell
8945

Audit


(सुभाष चंद्र यादव)
हिंदी अधिकारी

SP055024253
01/12/21



कार्यालय पत्रिका उदयाचल के 37वें अंक का विमोचन



अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय का कार्यालय में अभिनंदन



अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा पौधारोपण



लोक लेखा समिति के माननीय सदस्यों के साथ अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, प्रधान महालेखाकार (ले.प.), प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) एवं वरि. उप महालेखाकार विचार-विमर्श करते हुए



लोक लेखा समिति, झारखण्ड के माननीय अध्यक्ष एवं सदस्य द्वारा अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय से मुलाकात एवं नियम पुस्तिका की भेंट, साथ में प्रधान महालेखाकार महोदय



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय द्वारा प्रेस वार्ता संबोधन



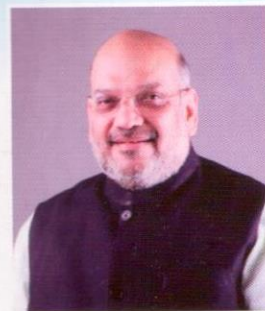
माननीय सांसद, श्री संजय सेठ, द्वारा बोर्ड रूम के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलन



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय द्वारा पौधारोपण

अमित शाह
गृह मंत्री, भारत

AMIT SHAH
Home Minister, India



प्यारे देशवासियों

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वा भी प्रदान करती है। आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है रूपाभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है। हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है। इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हो, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक नई शिक्षा नीति हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है। विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था।

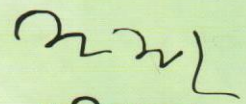
भाइयों, बहनों वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। प्यारे देशवासियों जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कमरखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता

के हौसले को बढ़ाने के लिए समयसमय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके। कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल कंठस्थ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए लीला हिंदी ऐप, लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है। कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई पत्रिका पुस्तकालय अप्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठके एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह प्र की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ है प्रेरणा प्रोत्साहन, प्रेम पुरस्कार प्रशिक्षण प्रयोग, प्रचार प्रसार प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह प्र की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है। हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है। मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हु इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके। दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा। संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है। आइए। हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे। हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम ! नई दिल्ली, 42004

नई दिल्ली

....., 2021


अमित शाह